TRANSLATION AND COMMUNICATION IN HINDI

STUDY MATERIAL

Common Course for BA/B.Sc
(2011 ADMISSION)

(II Semester)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

CALICUT UNIVERSITY P.O., MALAPPURAM, KERALA, INDIA-673635

115

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study Material :

TRANSLATION AND COMMUNICATION IN HINDI

COMMON COURSE FOR BA/B.Sc II Semester

Prepared by :

Dr. PAVOOR SASHEENDRAN
38/1294, 'APPUGHAR'
P.O. EDAKKAD, CALICUT - 5

Type Setting and Lay out :

Computer Cell
School of Distance Education
University of Calicut

Copyright
Reserved

विषय-सूची

पृ. सं.

Unit 1	:	वर्ण-विचार	5 - 7
Unit 2	:	सन्धि	8 - 8
Unit 3	:	शब्द-विचार	9 - 10
Unit 4	:	संज्ञा	11 - 12
Unit 5	:	लिंग-वचन	13 - 15
Unit 6	:	कारक	16 - 16
Unit 7	:	सर्वनाम	17 - 19
Unit 8	:	विशेषण	20 - 20
Unit 9	:	क्रिया	21 - 22
Unit 10	:	क्रियाओं के रूपान्तर	23 - 26
Unit 11	:	कृदन्त	27 - 28
Unit 12	:	अव्यय	29 - 31
Unit 13	:	उपसर्ग और प्रत्यय	31 - 31
Unit 14	:	समास	32 - 32
Unit 15	:	वाक्य-विचार	33 - 34
Unit 16	:	भाषा का शुद्ध रूप	35 - 43
Unit 17	:	हिन्दी भाषा	44 - 50
Unit 18	:	अनुवाद	51 - 59
Unit 19	:	पारिभाषिक शब्दावली	60 - 67
Model Question Paper			68 - 70

TEXTS :

1. Vyavaharik Hindi Vyakaran - Anuvad thatha Rachna
2. Bhasha ke Vivid Roop aur Anuvad

Unit 1 - वर्ण-विचार

Q. भाषा किसे कहते हैं ?

a: मनुष्य के मुख के निश्चित स्थान से, निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप किसी भाव या विचार को प्रकट करने के लिए निकलनेवाली ध्वनियों के समूह को भाषा कहते हैं ।

Q. कथित भाषा क्या है ?

a: कथन या बोलने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली भाषा को कथित भाषा कहते हैं । यही भाषा का मूल रूप है ।

Q. लिखित भाषा क्या है ?

a: दूरवर्ती लोगों से विचार-विनिमय के लिए उपयोग में लायी जानेवाली भाषा को लिखित भाषा कहते हें । इसका प्रचलन लेखन-पद्धति के आविष्कार के बाद ही हुआ ।

Q. व्याकरण से क्या मतलब है ?

a: व्याकरण उस विद्या को कहते हैं जो हमें शुद्ध भाषा बोलना और लिखना सिखाती है ।

Q. व्याकरण में क्या-क्या होते हैं ?

a: व्याकरण में भाषा के वर्ण, शब्द, वाक्य आदि के शुद्ध रूपों और उनके शुद्ध प्रयोगों का निरूपण होता है ।

Q. व्याकरण भाषा के लिए क्यों आवश्यक है ?

a: भाषा की शुद्धता और व्यवस्था को बनाये रखने के लिए व्याकरण अनिवार्य है । व्याकरणिक नियमों का उल्लंघन हो जाय तो भाषा अशुद्ध हो जाती है ।

Q. भाषाध्ययन के क्या-क्या स्तर हैं ? या, व्याकरण के कौन-कौन से अंग है ?

a: भाषाध्ययन के तीन स्तर हैं - वाक्य-विचार, शब्द-विचार और वर्ण-विचार ।
वर्ण-विचार में भाषा के वर्णों या अक्षरों के रूप, उच्चारण तथा एक दूसरे से संयुक्त करने के नियमों का अध्ययन होता है। शब्द-विचार में शब्दों की बनावट, उनका रूप, भेद और प्रयोग के नियमों का अध्ययन होता है ।वाक्य-विचार में वाक्यों की बनावट के नियम का विस्तृत अध्ययन होता है ।

Q. वर्ण किसे कहते हैं ?

a: भाषा में प्रयुक्त मूल ध्वनि अथवा उसके चिह्न को वर्ण कहते हैं । या वर्ण उस ध्वनि को कहते हैं जिसके और खण्ड नहीं किये जा सकते । जैसे - अ, इ, क्, ल, व, च आदि ।

Q. वर्ण कितने प्रकार के हैं ?

a: वर्ण दो प्रकार के हैं - स्वर और व्यंजन ।

Q. स्वर क्या है ?

a: स्वर उन वर्णों को कहते हैं जिनका उच्चारण बिना अवरोध से होता है ।

Q. हिंदी में कितने स्वर हैं और वे क्या-कया हैं ?

a: हिंदी में ग्यारह स्वर हैं -अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ ।

Q. व्यंजन क्या है ?

a: व्यंजन वर्ण वे हैं जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है । प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है ।

Q. स्वरों के भेदों पर प्रकाश डालिए ।

a: बनावट के आधार पर स्वरों के तीन भेद हैं - मूल स्वर, दीर्घ स्वर और संयुक्त स्वर । स्वरों के उच्चारण में काल या समय की जो मात्रा लगती है उसके अनुसार तीन भेद हैं - लघु, गुरु और प्लुत ।

जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है उसे लघु स्वर कहते हैं ।

(ह्रस्व स्वर) -- अ,इ,उ,ऋ ।

जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राएँ लगती हैं उन्हें गुरु स्वर (दीर्घ स्वर) कहते हैं ।

आ, ई, ऊ ।

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगे, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं ।

जैसे रा *SSS* म, हा *SSS* य ।

अनुनासिकता के आधार स्वरों के दो भेद हैं -सानुनासिक स्वर और निरनुनासिक स्वर ।

सानुनासिक स्वरों का उच्चारण नाक और मुँह से होता है - जैसे गाँव, आँगन, आँचल आदि ।

केवल मुँह से बोले जानेवाले स्वर वर्णों को निरनुनासिक कहते हैं । जैसे - इधर, अपना, घर आदि ।

व्यंजनों के भेद

Q. व्यंजन किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद हैं ?

a: स्वर की सहायता से उच्चरित होनेवाले वर्णों को व्यंजन कहते हैं । हिंदी में तैंतीस व्यंजन हैं।

बनावट की दृष्टि से व्यंजनों के तीन भेद हैं - स्पर्श व्यंजन, अन्तस्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन ।

स्पर्श व्यंजन :- जिन व्यंजनों के उच्चारण में हमारी जीभ मुख के किसी न किसी स्थान का स्पर्श करें, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं । इनको पाँच वर्गों में विभाजित किया है ।

क, ख, ग, घ, ङ - कवर्ग
च, छ, ज, झ, ञ - चवर्ग
ट, ठ, ड, ढ़, ण - टवर्ग
त, थ, द, ध, न - तवर्ग
प, फ, ब, भ, म - पवर्ग

अन्तस्थ व्यंजन :- इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के किसी भी भाग का पूरा स्पर्श नहीं करती ।

य, र, ल, व ।

ऊष्म व्यंजन :- ऊष्म व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख-विवर से किसी स्थान में बने संकरे रास्ते से रगड़ खाकर निकलती है - श, ष, स, ह ।

Q. संयुक्त व्यंजन कैसे बनते हैं ?

a: कभी कभी दो व्यंजनों के बीच का स्वर लुप्त रहता है तो ये दोनों व्यंजन संयुक्त हो जाते हैं, इन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं ।

जैसे - स् + त् + अ = स्त
ल् + य् + अ = ल्य

कुछ व्यंजनों के अंत में खडीपाई रहती है (।) जैसे - ख, घ, च, झ आदि । इन व्यंजनों के साथ दूसरा व्यंजन संयुक्त हो जाए तो खडीपाई लुप्त होती है - जैसे ख्य, ग्न, त्स, प्त, व्य ।

संयुक्त व्यंजन के पहले सदस्य के रूप में 'र' हो तो दूसरा व्यंजन लिखकर उसकी शिरोरेखा के ऊपर 'C' लिखते हैं - जैसे र्क, र्त, र्प, र्ग आदि ।

दूसरे सदस्य के रूप में 'र' हो तो खडीपाई वाले व्यंजन के नीचे /लगता है जैसे - ग्र, ज्र, प्र, स्त्र, आदि ।

कुछ व्यंजनों के साथ दूसरा कोई व्यंजन संयुक्त हो जाए तो पहले व्यंजन के नीचे हल-चिह्न (\) लगाकर लिखते हैं । जैसे - द्व, ट्ठ, छ्व आदि ।

विशिष्ट लिपि चिन्होंवाले व्यंजन भी होते हैं - जैसे - क्ष-क्ष, त-त्र, ज्ञ-ज्ञ, द्य-द्य आदि ।

Q. उच्चारण स्थान से क्या तात्पर्य है ? इस आधार पर हिंदी वर्णों का वर्गीकरण कीजिए ।

a: कोई भी वर्ण मुँह के भिन्न-भिन्न भागों से बोला जाता है । इन्हें उच्चारण स्थान कहते हैं।

उच्चारण स्थान के आधार पर वर्णों के निम्नलिखित भेद हैं - कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, कंठ तालव्य, कंठोष्ठ्य, दंतोष्ठ्य और नासिक ।

कंठ्य -- कंठ और निचली जीभ के स्पर्श से उच्चरित होनेवाले वर्ण - अ, आ,

कवर्ग, ह और विसर्ग ।

तालव्य	--	तालु और जीभ के स्पर्श से - इ, ई, चवर्ग, य और श ।
मूर्धन्य	--	मूर्धा और जीभ के स्पर्श से - ऋ, टवर्ग, र और ष ।
दन्त्य	--	दाँत और जीभ के स्पर्श से - तवर्ग, ल, स ।
ओष्ठ्य	-	दोनों ओठों के स्पर्श से - उ, ऊ, पवर्ग ।
कण्ठतालव्य	--	कण्ठ और तालु में जीभ के स्पर्श से - ए, ऐ, ।
कण्ठोष्ठ्य	--	कण्ठ द्वारा जीभ और ओठों के कुछ स्पर्श से - ओ और औ ।
दंतोष्ठ्य	--	दाँत से जीभ और ओठों के कुछ योग से - व ।
नासिक	--	ङ, ञ, ण, न, म ।

Q. घोषत्व के आधार पर हिन्दी वर्णों का परिचय दीजिए ।

a: घोषत्व के आधार पर हिन्दी वर्णों के दो भेद हैं - घोष वर्ण और अघोष वर्ण । जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों में कंपन की मात्रा अधिक होती है उन्हें घोष वर्ण कहते हैं । सारे स्वर घोष वर्ण हैं साथ साथ ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह । जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन की मात्रा कम होती है उन्हें अघोष वर्ण कहते हैं । क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स आदि अघोष वर्ण हैं।

Q. प्राणत्व के आधार पर वर्णों के भेदों पर प्रकाश डालिए ।

a: प्राणत्व के आधार पर वर्णों के दो भेद हैं - महाप्राण वर्ण और अल्पप्राण वर्ण ।

महाप्राण वर्णों के उच्चारण में श्वास (हवा) की मात्रा अधिक लगती है । सारे स्वरों के साथ क,ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व महाप्राण वर्ण हैं । अल्पप्राण वर्णों के उच्चारण में हवा की मात्रा कम लगती है ।

ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह ।

Unit 2 - सन्धि

Q. सन्धि क्या है ?

a: दो वर्णों के मेल से होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं । जैसे :- सत्य + अर्थ = सत्यार्थ - यहाँ सत्य का 'अ' और अर्थ का 'अ' निकट आने पर दोनों का मेल हो गया ओर 'आ' बन गया। शब्द बना -'सत्यार्थ'।

Q. सन्धि के कितने भेद हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

a: सन्धि के तीन भेद हैं - स्वरसन्धि, व्यंजनसन्धि और विसर्गसन्धि ।

स्वरसन्धि :- दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वरसन्धि कहते हैं ।

उदा :-	इ + इ = ई	: रवि + इन्द्र	= रवीन्द्र
	अ + अ = आ	: राम + अवतार	= रामावतार
	उ + उ = ऊ	: गुरु + उपदेश	= गुरूपदेश
	अ + उ = आ	: पर + उपकार	= परोपकार
	अ+ ए = ऐ	: सदा + एव	= सदैव
	अ + ओ = औ	:	

व्यंजनसन्धि :- व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजनसन्धि कहते हैं ।

उदा :-	जगत् + ईश्वर	= जगदीश्वर
	वाक् + ईश	= वागीश
	उत् + लास	= उल्लास
	जगत् + जननी	= जगज्जननी
	वाक् + मय	= वाङ्मय
	जगत् + नाथ	= जगन्नाथ

विसर्गसन्धि :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है, उसे विसर्गसन्धि कहते हैं ।

उदा :-	तमः + गुण	= तमोगुण
	मनः + बल	= मनोबल
	पुनः + चर्चा	= पुनश्चर्चा
	मनः + ताप	= मनस्ताप
	दुः + सह	= दुस्सह
	निः + करुण	= निष्करुण
	चतुः + कोण	= चतुष्कोण
	निः + रोग	= नीरोग
	निः + आशा	= निराशा

Q. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए ।

a:

जगदीश	= जगत् + ईश	(व्यंजनसन्धि)
नयन	= ने + अन	(स्वरसन्धि)
पावक	= पौ + अक	(स्वरसन्धि)
चंद्रेश	= चन्द्र + ईश	(स्वरसन्धि)
उज्ज्वल	= उत् + जल	(व्यंजनसन्धि)
दुस्साहस	= दुः + साहस	(विसर्गसन्धि)
नीरस	= निः + रस	(विसर्गसन्धि)
पुनश्चर्या	= पुनः + चर्या	(विसर्गसन्धि)

Unit 3 - शब्द विचार

Q. शब्द किसे कहते हैं ? अर्थ के आधार पर शब्दों के कितने भेद हैं ?

a: ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्ण समुदाय को शब्द कहते हैं । या सार्थक वर्ण-समूह को शब्द कहते हैं ।

उदाः-मानव, चावल, खुशी, शहर आदि ।

अर्थ की दृष्टि से शब्दों के दो भेद हैं - सार्थक और निरर्थक ।

सार्थक शब्दों के अर्थ होते हैं । जैसे - पानी, कमल । जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, उन्हें निरर्थक कहते हैं । जैसे - चरहत, खट-खट आदि ।

Q. व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के भेदों पर प्रकाश डालिए ।

a: शब्दों की व्युत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर चार भेद हैं - तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी (विदेशज) ।

तत्सम :- संस्कृत भाषा से बिना कोई रूप-परिवर्तन से हिन्दी में आनेवाले शब्दों को तत्सम कहते हैं । (तत्सम शब्द का अर्थ है 'उसके समान' या 'ज्यों का त्यों') ।

उदा :- माला, माता, लता, कला आदि ।

तद्भव :- ऐसे शब्द जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आये हैं, उन्हें तद्भव कहते हैं ।

जैसे - अग्नि - आग

वत्स - बच्चा

क्षेत्र - खेत

पुष्प - फूल

देशज :- देशज वे शब्द हैं जो भारत की अन्य बोलियों से लिये गये हैं । ये अपने ही देश में बोलचाल से बने हैं ।

उदा :- पेड़, गाडी, चिडिया, कटोरा, ठुमरी, जूता आदि ।

विदेशी (विदेशज) :- विदेशी भाषाओं से हिंदी में आये शब्दों को विदेशी अथवा विदेशज शब्द कहते हैं ।

उदा :- अंग्रेज़ी से - टिकट, कॉलेज, माइल, नोटिस

फारसी से - बाज़ार, गवाही, आफ़त

अरबी से - कदम, फकीर, अदालत, अखबार

तुर्की से - बीवी, सौगात, कैंची, चेचक

Q. रूपान्तर के आधार शब्दों के कितने भेद हैं ?

a: रूपान्तर के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं - विकारी और अविकारी ।

विकारी शब्द वे हैं जिनमें लिंग, वचन, कारक और पुरुष के कारण रूपान्तर होते हैं । जैसे लड़का - लड़के, वे - उन,बड़ा - बड़े, बड़ी ।

विकारी शब्दों के चार भेद हैं :-

संज्ञा – मोहन, लड़का, गाय ।

सर्वनाम – मैं, तुम, वह, मेरा ।

विशेषण – ऊँचा, बड़ा ।

क्रिया – खाना, उड़ना, दौड़ना, लिखना ।

अविकारी शब्द वे हैं जिनमें लिंग, वचन, कारक, पुरुष आदि के कारण कोई रूपान्तर नहीं होता । जैसे – जल्दी, के पास, और, अभी ।

अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं –

क्रिया विशेषण – जल्दी, तेज़, धीमे, बहुत ।

संबन्ध बोधक – साथ, बिना ।

समुच्चय बोधक – और, या, तथा ।

विस्मयादिबोधक – वाह, आह, धत्, हाय आदि ।

Q. रचना अथवा बनावट के आधार शब्दों के कितने भेद हैं ? सोदाहरण परिचय दीजिए।

a: रचना अथवा बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं – रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ ।

रूढ़ :- जिन शब्दों के सार्थक खण्ड नहीं हो सकते, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं ।

उदा : दूध, फूल, घर, आदमी ।

यौगिक :- यौगिक शब्द वे हैं जो दो शब्दों या शब्दांशों के योग से बनते हैं ।

उदा : पाठशाला, सज्जन, बचपन, उपकार, विद्यालय ।

योगरूढ़:- योगरूढ़ शब्द वे हैं जो शब्दों या शब्दांशों के मेल से बनते हैं, पर उनका विशेष अर्थ होता है ।

उदाः- अम्बुज (अम्बु + ज) : कमल ।

अंगरखा (अंग + रखा) : विशेष प्रकार का कुर्ता ।

मुरलीधर (मुरली + धर) : कृष्ण

Unit 4 - संज्ञा

Q. संज्ञा की परिभाषा दीजिए ।

a: जो शब्द व्यक्ति, वस्तु, जाति, स्थान, गुण या भाव के नाम का बोध करायें, उन्हें संज्ञा कहते हैं । जैसे - राम, कलम, दिल्ली, मनुष्य, भलाई ।

Q. संज्ञा के कितने भेद हैं ? सोदाहरण बताइए ।

a: संज्ञा के तीन भेद हैं - व्यक्तिवाचक (**Proper Noun**), जातिवाचक (**Common Noun**) और भाववाचक (**Abstract Noun**)

व्यक्तिवाचक संज्ञा :

जिस शब्द से किसी एक व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे - राधा, घोड़ा, भारत, गंगा, चेन्नै आदि ।

जातिवाचक संज्ञा :

एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं के नाम को सूचित करनेवाली संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे - आदमी, जानवर, पक्षी, पुस्तक, नगर, पहाड़ ।

भाववाचक संज्ञा :

जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म, दशा अथवा व्यापार का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे - मिठास, भलाई, वीरता, दौड़ आदि ।

Q. भाववचाक संज्ञाएँ किन-किन शब्दों से बनती हैं ? सोदाहरण बताइए ।

a: भाववाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा, विशेषण,क्रिया,सर्वनाम, अव्यवय आदि से बनती हैं ।

जैसे - **1**) जातिवाचक संज्ञा से

मानव-मानवता, बूढ़ा - बुढ़ापा
दोस्त - दोस्ती, मित्र - मित्रता
पंडित - पंडिताई (पांडित्य)

2) विशेषण से

चतुर-चतुराई, वीर-वीरता
गरम - गरमी, बड़ा - बड़प्पन
कठोर - कठोरता, मीठा - मिठास ।

3) क्रिया से

चुनना - चुनाव, चढ़ना - चढ़ाई
घबराना - घबराहट, दौड़ना - दौड़
मुड़ना - मोड़, मारना - मार ।

4) सर्वनाम से

अपना - अपनापन, मम - ममता
निज - निजत्व
स्व - स्वत्व

5) अव्यय से

शबाश - शबाशी, वाह-वाह - वाहवाही ।

Q. नीचे दिये गये शब्द संज्ञा के किस रूप में आते हैं ?

a:

जानवर - जातिवाचक	रामनाथ - व्यक्तिवाचक
क्रोध - भाववाचक	खुशी - भाववाचक
मनुष्य - जातिवाचक	मुंबई - व्यक्तिवाचक
चिन्ता - भाववाचक	गोमती - व्यक्तिवाचक
नगर - जातिवाचक	लड़कपन - भाववाचक

Unit 5 - लिंग-वचन

Q. लिंग किसे कहते हैं ? हिन्दी में कितने लिंगों की व्यवस्था होती है ?

a: संज्ञा के जिस रूप से यह जाना जाय कि वह पुरुष-सूचक है या स्त्री-सूचक, उसे लिंग कहते हैं । हिन्दी में दो लिंग हैं - - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग ।

Q. अप्राणिवाचक शब्दों के सामान्य नियम क्या-क्या हैं ?

a: **(a)** अर्थ के आधार पर निम्नांकित शब्द पुल्लिंग होते हैं -

1) चैत्र, अगहन, पौष, सावन, बैसाख आदि महीनों के नाम ।

2) मंगलवार, शुक्रवार आदि वारों के नाम ।

3) चन्द्र, बुध, मंगल, सूर्य, शनि, राहु, केतु आदि ग्रहों के नाम ।

4) समुद्रों के नाम - कृष्णसागर, प्रशान्त महासागर ।

5) पर्वतों के नाम - विंध्य, सह्य, हिमालय, आल्प्स ।

6) देशों के नाम - जापान, चीन आदि ।

7) पेड़ों के नाम - कटहल, बरगद, नीम, चन्दन, पीपल, आम आदि ।

8) अनाजों के नाम - उड़द, चना, गेहूँ, बाजरा आदि ।

9) द्रव पदार्थों के नाम - दही, तेल, घी, पानी, दूध, शर्बत आदि ।

10) रत्नों के नाम - मोती, मूँगा, हीरा आदि ।

11) धातुओं के नाम - ताँबा, लोहा, पीतल, सोना आदि ।

(b) अर्थ के अनुसार ये स्त्रीलिंग शब्द हैं -

1) तिथियों के नाम - चौथ, नौमी, एकादशी, पंचमी आदि ।

2) नक्षत्रों के नाम - रोहिणी, आर्द्रा, चित्रा, अश्विनी, भरणी ।

3) भाषाओं के नाम - पंजाबी, जापानी, बंगला, हिन्दी, मराठी ।

4) नदियों के नाम - सिंधु, गंगा, गोदावरी आदि ।

(c) रूप के आधार पर ये शब्द पुल्लिंग होते हैं -

1) आकारान्त शब्द - कमरा, छाता, लोटा ।

2) आव, पन, पा, त्व में अन्त होनेवाले शब्द - छिपाव, लगाव, बचपन, बुढ़ापा, लघुत्व, कवित्व ।

(d) रूप के अनुसार ये शब्द स्त्रीलिंग होते हैं -

1) ईकारान्त - टोपी, चाँदी, चिट्ठी, कुरसी ।

2) ऊनवाचक - खटिया, लुटिया, डिबिया ।

3) ता, ई, हट, वट में अन्त होनेवाली भाववाचक संज्ञायें - बडाई, लडाई, लघुता, लिखावट, घबराहट आदि ।

वचन :-

Q. वचन की परिभाषा देकर हिन्दी के वचनों का परिचय दीजिए ।

a: संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं । हिन्दी में दो वचन हैं – एकवचन और **बहुवचन** ।
शब्द के जिस रूप से एक पदार्थ या व्यक्ति का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं । जैसे - नदी, लड़का, घोडा आदि ।
शब्द के जिस रूप से अधिक पदार्थों या व्यक्तियों का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं । जैसे – नदियाँ, लड़के, घोडे, बच्चे आदि ।

Q. पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन रूप कैसे बनाये जाते हैं ?

a: पुल्लिंग शब्दों में तरह-तरह के प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाये जाते हैं – जैसे,

1) 'आ' को 'ए' में बदलकर –

लडका - लडके	बकरा - बकरे
घोड़ा - घोडे	कपडा - कपडे
शीशा - शीशे	लोटा - लोटे
कौआ - कौए	चरखा - चरखे
गधा - गधे	बेटा - बेटे ।

लेकिन मामा, चाचा, दादा, नाना, बाबा आदि शब्दों के बहुवचन में एकारान्त नहीं होते ।

2) स्त्री लिंग शब्दों के अंत में 'एँ', 'यां', 'इयाँ', 'बिन्दी' आदि लगाकर बहुवचन बनाते हैं।

जैसे – **a)** उ, ऊ, औ के अंत में एँ लगाकर

माता - माताएँ, कन्याएँ

ऋतु - ऋतुएँ, पुस्तक - पुस्तकें, गाय - गायें, रात - रातें, बहिन - बहिनें आदि ।

b) इ, ई को क्रमशः याँ और इयाँ में बदलकर –

जैसे – तिथि - तिथियाँ		शक्ति - शक्तियाँ
रोटी - रोटियाँ		नदी - नदियाँ
गाडी - गाडियाँ		धोती - धोतियाँ
दासी - दासियाँ		रानी - रानियाँ
लडकी - लडकियाँ		पंक्ति - पंक्तियाँ

Q. हिन्दी में अन्य लिंग रूप बनाने के नियमों पर प्रकाश डालिए ।

a: **1**) आकारान्त को ईकारान्त में बदलकर –

दादा - दादी	घोडा - घोडी
मामा - मामी	मोर - मोरनी

2) 'नी' प्रत्यय लगाकर –

शेर - शेरनी, मोर - मोरनी, हाथी - हथिनी

3) 'इन' प्रत्यय लगाकर –

धोबी - धोबिन	तेली - तेलिन
सुनार - सुनारिन	लुहार - लुहारिन

4) 'आइन' लगाकर –

पांडे - पंडाइन	बनिया - बनियाइन
पंडित - पंडिताइन	ठाकुर - ठकुराइन

5) 'इया' प्रत्यय लगाकर –

बेटा - बिटिया कुत्ता - कुत्तिया लोटा - लुटिया

कुछ विशेष प्रकार के शब्द

1) इन शब्दों में बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे - फल, घर, पेड, विद्यार्थी, मोती

2) इन शब्दों के बहुवचन रूप नहीं होते - दया, करुणा, भय, आनन्द आदि ।

3) कभी मादा, स्त्री आदि लगाकर पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाये जाते हैं । जैसे -

नर भेडिया - मादा भेडिया नर कौआ - मादा कौआ

पुरुष सदस्य - स्त्री सदस्य ।

Q. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप बनाइए ।

घंटा - धंटे	दादा - दादा	जाति - जातियाँ	प्याला - प्याले
आलू - आलू	नली - नलियाँ	रास्ता - रास्ते	झाडू - झाडुएँ
रोटी - रोटियाँ	गुडिया - गुडियाँ	चीज़ - चीज़ें	कथा - कथाएँ
डिबिया - डिबियाँ	वस्तु - वस्तुएँ	सूचना - सूचनाएँ	बहिन - बहिनें
पुस्तक - पुस्तकें	कला - कलाएँ	लोटा - लोटे	बात - बातें
बहू - बहुएँ	कवि - कवि	मंत्री - मंत्री	पक्षी - पक्षी
मनुष्य - मनुष्य	आदमी - आदमी		

Q. निम्नलिखित शब्दों के अन्य लिंग रूप बनाइए ।

नाई - नाईन	राजा - रानी	मामा - मामी
बाघ - बघिन	वधू - वर	देव - देवी
ससुर - सास	स्त्री - पुरुष	नायक - नायिका
कुत्ता - कुत्तिया	पंडित - पंडिता	दास - दासी
पिता - माता	बेटा - बिटिया	कवि - कवयित्री
बादशाह- बेगम	अभिनेता - अभिनेत्री	प्रिय - प्रिया
बैल - गाय	श्रीमान - श्रीमती	बालक - बालिका
भैंस - भैंसा	सेविका - सेवक	स्वामी - स्वामिनी
माँ - बाप	बहन - भाई	

Unit 6 - कारक

Q. कारक की परिभाषा देकर उसके भेदों पर प्रकाश डालिए ।

a: संज्ञा या सर्वनाम के जिन रूपों से उनका वाक्य के अन्य शब्दों से और क्रिया से संबन्ध सूचित हो उन्हें कारक कहते हैं।

उदा :- बालक ने मेज़ पर किताब रखी ।

यहाँ ने, पर आदि से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबन्ध सूचित होता है । ने, पर आदि को कारकचिह्न कहते हैं ।

हिन्दी में आठ कारक हैं –

कर्ताकारक	(**Nominative**)	ने (कारक चिह्न)
कर्मकारक	(**Objective**)	को (कारक चिह्न)
करण	(**Instrumental**)	से (कारक चिह्न)
संप्रदान	(**Dative**)	को, केलिए (कारक चिह्न)
अपादान	(**Ablative**)	से (कारक चिह्न)
संबन्ध	(**Genitive**)	का, के, की, रा, रे, री (कारक चिह्न)
अधिकरण	(**Locative**)	में, पर (कारक चिह्न)
संबोधन	(**Addressive**)	हे, अजी, अहो, अरे आदि

1) कर्ता कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करनेवाले (कर्ता) का बोध हो उसे कर्ता कारक कहते हैं ।

उदा : राम पढ़ता है / मोहन ने आम खाया ।

2) कर्म कारक :- (को) जिस पर क्रिया का फल पडे, उसका बोध करानेवाले शब्द-रूप को कर्मकारक कहते हैं ।

उदा : राम ने पुस्तक पढ़ी / मोहन ने रामू को पीटा ।

3) करण कारक :- (से) शब्द के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं ।

उदा : उसने पत्र कलम से लिखा ।

4) संप्रदान :- (को, के लिए) शब्द के जिस रूप से किसी के लिए कुछ देने या किसी के लिए कुछ किये जाने का बोध हो उसे संप्रदान कारक कहते हैं ।

उदा : माँ शिशु के लिए दूध ला रही है/ यह पेंसिल उसको लौटा दो ।

5) अपादान :- (से) शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी से अलग होना सूचित हो उसे अपादान कारक कहते हैं ।

उदा : पेड़ से पत्ते गिरे ।

6) संबन्ध कारक :- (का,के,की) शब्द के जिस रूप से एक वस्तु या व्यक्ति या वस्तु से संबन्ध सूचित हो उसे संबन्ध कारक कहते हैं ।

उदा : राम ने शिव का धनुष तोड़ा / यह मेरा घर है । (मैं + का = मेरा)

7) अधिकरण कारकः-(में, पर) शब्द के जिस रूप से किसी के किसी अन्य में या पर आश्रित होने का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं । उदा : कमरे में लडकी बैठी है / मेज़ पर पुस्तकें रखी हैं ।

8) संबोधन :- (हे, अरे, हो) शब्द के जिस रूप से किसी को संबोधित करने का बोध हो उसे संबोधन कारक कहते हैं ।

उदा : रे, इधर बैठ / हे, ईश्वर, मेरी रक्षा कर ।

Q. कारकीय परसर्गों के लगाने से संज्ञा में होनेवाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए ।

a: कारकीय परसर्गों के लगाने पर संज्ञा में कई परिवर्तन होते हैं ।

a) आकारान्त पुल्लिंग शब्दों में परसर्ग लगें, तो वह एकारान्त हो जाता है ।

बेटा + को = बेटे को चूहा + को = चूहे को

कमरा + में = कमरे में

b) बहुवचन संज्ञाओं के साथ परसर्ग लगाने से 'ओं' हो जाता है । जैसे –

कमरे + में = कमरों में तिथियाँ + पर = तिथियों पर

चिडियाँ + को = चिडियों को

Unit 7 - सर्वनाम

Q. सर्वनाम से क्या तात्पर्य है ?

a: सर्वनाम वह विकारी शब्द है जो संज्ञा के स्थान पर उसके अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है ।
उदा : राम ने कहा कि वह किताब लेकर तुरन्त आयेगा ।
यहाँ राम के बदले 'वह' शब्द का प्रयोग किया है । यही सर्वनाम है ।

Q. हिन्दी में सर्वनाम शब्द कौन - कौन से हैं ?

a: हिन्दी में निम्नलिखित सर्वनाम शब्द हैं। मैं, हम, तू, तुम, आप, यह, ये, वह, वे, सो, जो, कोई, कौन, कुछ, क्या आदि ।

Q. सर्वनाम के कितने भेद हैं ?

a: सर्वनाम के छः भेद हैं - पुरुषवाचक, निश्चय वाचक, अनिश्चय वाचक, संबन्ध वाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक ।

Q. सर्वनाम के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

a: **1**) पुरुषवाचक सर्वनाम :- जिस सर्वनाम से वक्ता, श्रोता तथा अन्य पुरुष का बोध हो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसके तीन भेद हैं - उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष।

उत्तम पुरुष : बात करनेवाले के लिए प्रयुक्त होनेवाला सर्वनाम उत्तम पुरुष कहलाता है । जैसे - मैं, हम ।

मध्यम पुरुष : जिससे बात की जाये या श्रोता के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है उसे मध्यम पुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे - तू, तुम, आप ।

अन्य पुरुष : जिसके बारे में कुछ कहा या लिखा जाता है उसको सूचित करनेवाला सर्वनाम अन्य पुरुष कहलाता है । जैसे - वह, वे, यह, ये ।

2) निश्चयवाचक सर्वनाम :- जो सर्वनाम निश्चित वस्तु, स्थान या व्यक्ति के लिए आये, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे - यह, ये, वह, वे ।
उदा :- वे यहाँ आये । यह इधर ही रहता है ।

3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम :- जो सर्वनाम किसी अनिश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करता है,उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे - कोई, कुछ ।
उदा : कोई इस ओर देख रहा है ।/ कुछ करके दिखाओ ।

4) संबन्धवाचक सर्वनाम :- जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबन्ध स्थापित किया जाय, उसे संबन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे - जो, सो ।
उदा : वह कौन है जो उधर काम कर रहा है ।

5) प्रश्नवाचक सर्वनाम :- प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे - कौन, क्या ।
उदा : कौन इस ओर आता है ? / तुम क्या देख रहे हो ?

6) निजवाचक सर्वनाम :- जो सर्वनाम अपनेपन का बोध कराये उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे - अपना, आप
उदा : यह मेरी अपनी पुस्तक है । / वह अपने आप यह काम करेगा ।

Q. पुरुषवाचक 'आप' और निजवाचक 'आप' में क्या अंतर है ?

a: मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष में आदर सूचित करने के लिए 'आप' का प्रयोग करते हैं ।

निजवाचक 'आप' किसी संज्ञा या सर्वनाम के पीछे उसके समानाधिकरण के रूप में प्रयुक्त होता है । इस 'आप' का अर्थ है स्वयं या खुद ।

उदाः आप जो काम करते हैं, वह सही है । (पुरुषवाचक)

तू आप ही यह काम करेगा, मुझे मालूम है । (निजवाचक)

Q. 'कोई' और 'कुछ' सर्वनामों के विशेष प्रयोग पर प्रकाश डालिए ।

a: 'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम है, फिर भी कभी-कभी अनिश्चय से भिन्न अर्थों में भी प्रयुक्त होता है ।

उदा : हर कोई इससे मुकाबला नहीं कर सकता । (प्रत्येक पुरुष के अर्थ में)

कोई न कोई इस घर में रहेगा । (**Somebody** के अर्थ में)

कोई और किताब दिखाओ । (**Some other**)

'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम है । कभी कभी इससे भिन्न अर्थों में भी इसका प्रयोग होता है ।

उदा : ये चीज़ें अच्छी नहीं हैं, कुछ और दिखाओ । (**Some other** के अर्थ में)

अपनी मूर्खता से सब कुछ नष्ट किया । (**Every thing** के अर्थ में)

राधा को कुछ हो गया है । (क्रिया विशेषण के रूप में)

Q. कारकीय परसर्गों को जोड़ने से सर्वनामों में होनेवाले परिवर्तन पर प्रकाश डालिए ।

a: **a)** कारकीय परसर्गों के लगाने पर 'आप', 'क्या', 'कुछ' आदि सर्वनामों में कोई रूपान्तर न होता ।

उदा : आपने, आपको, आप में, आप पर, आपका ।

b) कारकीय परसर्गों से मैं, तू क्रमशः मुझ और तुझ बन जाते हैं ।

मुझको (मुझे)/ मुझसे, मुझमें, मुझ पर ।

तुझको (तुझे)/ तुझसे, तुझमें, तुझ पर ।

c) मैं, हम, तू, तुम के साथ का, के, की, के लिए लगाने पर इस तरह के परिवर्तन होंगे ।

मेरा,मेरे, मेरी, मेरे लिए ।

हमारा, हमारे, हमारी, हमारे लिए ।

तेरा, तेरे, तेरी, तेरे लिए ।

तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, तुम्हारे लिए ।

d) वे, ये, कौन, जो, सो के साथ परसर्गों के लगाने पर इस तरह के परिवर्तन होंगे ।

वे + ने = उन्होंने कौन + ने = किन्होंने ये + ने = इन्होंने

सो + ने = तिन्होंने जो + ने = जिन्होंने

Q. वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

a: हर कोई : हर कोई इसको उठा नहीं सकता ।

सब कोई : सब कोई साहित्य रचना नहीं कर सकता ।

कोई-कोई: कोई-कोई मानता है कि यहाँ ऐसा हुआ था ।

कुछ न कुछ : कुछ न कुछ दो, नहीं तो भूख से मैं मर जाऊँगा ।

कोई न कोई : कोई न कोई घर में रहेगा।

Q. शुद्ध कीजिए ।

a: **1)** मुझका घर मन्दिर के पास है ।

a) मेरा घर मन्दिर के पास है ।

2) तुम्हारा पुस्तक में कितना पाठ है ?

a) तुम्हारी पुस्तक में कितने पाठ हैं ?

3) गोपाल यह घर में नहीं रहता ।

a) गोपाल इस घर में नहीं रहता ।

4) यह आदमी को किसने बुलाया ।

a) इस आदमी को किसने बुलाया ।

5) वह उसका काम कर रहा है ।

a) वह अपना काम कर रहा है ।

6) कोई से यह मत कहना ।

a) किसी से यह मत कहना ।

7) देखो, कोई पुस्तक में यह कविता है ?

a) देखो, किसी पुस्तक में यह कविता है ?

8) कोई को मालूम नहीं कि उसके पास कितने रुपये हैं ।

a) किसी को मालूम नहीं कि उसके पास कितने रुपये हैं ।

Unit 8 - विशेषण

Q. विशेषण से क्या तात्पर्य है ?

a: विशेषण वह विकारी शब्द है जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता करता है ।
उदा : काला कुत्ता, मोटी किताब, सफेद बंगला, लाल किला

Q. विशेषण के कितने भेद हैं ? वे क्या-क्या हैं ?

a: विशेषण के चार भेद हैं जो इस प्रकार हैं - **a)** गुणवाचक विशेषण, **b)** संख्यावाचक विशेषण, **c)** परिमाणवाचक विशेषण, **d)** निर्देशक या सार्वनामिक विशेषण

Q. गुणवाचक विशेषण क्या है ?

a: जो विशेषण, संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, अवस्था, आकार, रंग आदि का बोध कराये उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं ।
जैसे - नीला, हरा, लाल, गुलाबी (रंग)
गन्दा, नीच, मूर्ख (दोष)
भला, उपकारी, प्रवीण, सच्चा, चतुर (गुण)
सख्त, संकरा, रोगी (अवस्था)
नया, पुराना, प्राचीन (काल)

Q. संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं ?

a: जो विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या की सूचना देते हैं उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं ।
उदा : दस आम, दो एकड़ (संख्या)
पहली पुस्तक, तीसरा लड़का, ग्यारहवाँ अध्याय (क्रम)
चौगुना गेहूँ, आठ गुना मूल्य (आवृत्ति)
संख्यावाचक विशेषण को दो रूपों में विभाजित कर सकते हैं - निश्चित संख्यावाचक और अनिश्चित संख्यावाचक ।
निश्चित संख्यावाचक : दो, तीन, तिगुना, चौगुना, ढाई, तीसरा, पाँचवाँ आदि ।
अनिश्चित संख्यावाचक : सब कुछ, कम, अनेक,कई, अधिक आदि ।

Q. परिमाणवाचक विशेषण पर प्रकाश डालिए ।

a: जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम के माप-तोल का बोध हो, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं । इसके दो भेद हैं - निश्चित परिमाणवाचक और अनिश्चित परिमाणवाचक ।
निश्चित परिमाणवाचक : बीस, पच्चीस, तीसरा, पांच गुना आदि ।
अनिश्चित परिमाणवाचक : बहुत, सारा, भारी, थोड़ा, अधिकांश ।

Q. सार्वनामिक या निर्देशक विशेषण का परिचय दीजिए ।

a: जो विशेषण किसी संज्ञा की ओर संकेत या निर्देश करें, वे संकेतवाचक, सार्वनामिक या निर्देशक सर्वनाम कहलाते हैं ।
उदा : यह मेरी पुस्तक है । (यह - सर्वनाम)
यह पुस्तक मेरी है । (यह - सार्वनामिक विशेषण)

Q. विशेष्य क्या है ?

a: जिस संज्ञा या सर्वनाम का विशेषण किया जाता है उसे विशेष्य कहते है ।
जैसे - काली गाय दौड रही है । (यहाँ 'गाय' विशेष्य है और 'काली' विशेषण है)

Q. विशेष्य विशेषण और विधेय विशेषण के अंतर को स्पष्ट कीजिए ।

a: विशेष्य के तुरन्त पहले प्रयुक्त विशेषण विशेष्य-विशेषण कहलाता है ।
जैसे - नीला आकाश । / सुन्दर लडका ।
विशेष्य के बाद तथा क्रिया से पूर्व, क्रिया के पूरक के रूप में प्रयुक्त विशेषण विधेय-विशेषण कहलाता है।
जैसे - मेरा मन भारी लगता है । / यह साडी कीमती नहीं है ।

Unit 9 - क्रिया

Q. क्रिया किसे कहते हैं ?

a: जिस शब्द से किसी काम या प्रवृत्ति का करना या होना समझा जाय उसे क्रिया कहते हैं ।
उदा : पढ़ना, लिखना, आना, जाना, पीना आदि ।

Q. धातु क्या है ?

a: क्रिया का मूल धातु है । जिन मूल शब्दों से क्रिया रूप बनते हैं, उन्हें धातु (**Verbroot**) कहते हैं ।
जैसे - सुन, देख, गा, जाग, ले, दे आदि ।

Q. क्रिया रूप से क्या तात्पर्य है ?

a: क्रिया रूप क्रिया का सामान्य रूप होता है जो धातु के साथ 'ना' प्रत्यय जोड़कर बनाया जाता है ।
जैसे -होना, करना, रोना, लिखना, पहुँचना आदि ।

Q. क्रियार्थक संज्ञा से क्या तात्पर्य है ?

a: कभी-कभी वाक्य में क्रिया रूपों का संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है, इन्हें क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं ।
उदा : दिन के वक्त सोना अच्छी आदत नहीं है ।

Q. कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं ?

a: कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं - सकर्मक और अकर्मक । सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं, जिसका कोई कर्म हो अथवा जिसके साथ कर्म की संभावना हो ।
उदा : मोहन आम खाता है - में मोहन कर्ता है और खाने के साथ उसका कर्तृरूप से संबन्ध है। इसमें क्या प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है, मोहन क्या खाता है ? तो उत्तर मिलता है कि वह आम खाता है। इसलिए यह सकर्मक क्रिया है ।

जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर है, वे अकर्मक कहलाती हैं। अकर्मक क्रियाओं का कर्म नहीं होता, क्रिया का फल और व्यापार दूसरे पर न पड़कर कर्ता पर ही पड़ता है ।
उदा : लड़की सोती है ।

Q. रचना या बनावट की दृष्टि से क्रियाओं के कितने भेद हैं ?

a: दो भेद हैं - मूल क्रिया और यौगिक क्रिया । जो क्रियाएँ धातुओं से बनती हैं उन्हें मूल क्रिया अथवा रूढ़ क्रियायें कहते हैं ।
जैसे - 'सो' से सोता है, सोया आदि ।
'ला' से लाता है, लाए, लायेंगे आदि ।
जो क्रियायें धातुओं अथवा अन्य शब्दों के साथ प्रत्यय लगाकर बनाई जाती हैं उन्हें यौगिक क्रियायें कहते हैं ।
जैसे - पढ़ - पढ़ाना, पढ़वाना
हाथ - हथियाना
चाल - चलाना, चलवाना आदि ।

Q. यौगिक क्रियाओं के भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए ।

a: यौगिक क्रियाओं के चार भेद हैं - प्रेरणार्थक क्रिया, नामधातु क्रिया, संयुक्त क्रिया और अनुकरणात्मक क्रिया।

a) प्रेरणार्थक क्रिया :- जब कर्ता स्वयं कार्य न करके अन्य को प्रवृत्त करें तो वह क्रिया प्रेरणार्थक कहलाती है ।

जैसे - लेखक लिखाता है - लेखक लिखवाता है ।

उसने सारे पत्र भिजवा दिये ।

उठना से उठाना, उठवाना (अकर्मक)

जागना से जगाना, जगवाना (अकर्मक)

देना से दिलाना, दिलवाना (सकर्मक)

खाना से खिलाना, खिलवाना (सकर्मक)

b) नामधातु क्रिया :- जो क्रियायें संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के आगे प्रत्यय लगाकर बनाई जायें, उन्हें नाम धातु क्रियायें कहते हैं ।

जैसे - हाथ से हथियाना	गरम से गरमाना
लाज से लजाना	लंगडा से लंगडाना
दुःख से दुःखाना	ठंडा से ठंडाना
त्याग से त्यागना	गडबड से गडबडाना
अपना से अपनाना	

c) संयुक्त क्रिया :- जब दो या दो से अधिक क्रियायें साथ आकर एक अर्थ को पूरा करें,तब वे संयुक्त क्रिया कहलाती है ।

उदा :- बच्चा माँ को देखते ही रोने लगा ।

इज्ज़त करना, मदद करना, दिखाई देना, बुरा लगना, दूर हटना, जल्दी करना आदि ।

संयुक्त क्रिया के दो रूप हैं - मुख्य क्रिया और रंजक क्रिया अथवा सहायक क्रिया ।

रंजक क्रियायें वे होती हैं जिनका अपना स्वतंत्र अर्थ होता है और जो अपना अपना अर्थ त्यागकर किसी मुख्य क्रिया के अर्थ में विशेषता पैदा करती है ।

जैसे - कर बैठ, बोल उठ, मार डाल आदि।

Q. अनुकरणात्मक क्रिया की परिभाषा दीजिए ।

a: जीवन के विविध संदर्भों में अनेक प्रकार की ध्वनियाँ सुनने में आती हैं । उन ध्वनियों का अनुकरण करते हुए भाषा में कुछ क्रियायें प्रचलित हैं । उन्हें अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं ।

जैसे - खट-खट : दरवाज़ा खटखटाना

थप-थप : बच्चे को थपथपाना

Q. प्रेरणार्थक रूप लिखिए ।

a:

जागना - जगवाना	सोना - सुलवाना
टूटना - टुटवाना	लेटना - लिटवाना
फटना - फटवाना	रखना - रखवाना
देना - दिलवाना	सीना - सिलवाना

Q. अनुकरणात्मक क्रिया रूप लिखिए ।

a:

बडबड - बडबडाना	थर-थर - थरथराना
टरटर - टरटराना	चहचह - चहचहाना
फड़-फड - फडफडाना	

Unit 10 - क्रियाओं के रूपान्तर

क्रिया विकारी शब्द है । लिंग, वचन, पुरुष, वाच्य और काल के कारण क्रिया में रूपान्तर होते हैं ।

वाच्य

Q. वाच्य से क्या तात्पर्य है ? उसके भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए ।

a: क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाये कि क्रिया कर्ता के अनुसार है या कर्म के अनुसार है या भाव के अनुसार है, उस रूप को वाच्य कहते हैं ।

जैसे - मैं पत्र लिखता हूँ (कर्ता के अनुसार)
मुझसे पत्र लिखा जाता है (कर्म के अनुसार)
मुझसे हंसा जाता है (भाव के अनुसार)

वाच्य के तीन भेद हैं - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाव वाच्य ।

कर्तवाच्य : वाक्य में क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार हो और उसका सीधा संबन्ध कर्ता से हो, तब कर्तृवाच्य होता है ।
उदा : लडका हँसता है । / कृष्ण पुस्तक पढ़ता है ।

कर्मवाच्य : जब वाक्य की क्रिया कर्म के अनुसार हो और उसीसे उसका संबन्ध हो, तो क्रिया कर्मवाच्य होती है ।
जैसे - कृष्ण से पुस्तक पढ़ी जाती है । / राधिका से दो आम खरीदे गये ।

भाववाच्य : क्रियाओं के जिस रूप से यह जाना जाता है कि क्रिया के विधान का मुख्य विषय भाव है तो उसे भाववाच्य कहते हैं ।
उदा : मुझसे खाया नहीं जाता । / बच्चे से रोया नहीं जाता ।

काल

क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने का समय जाना जाये, उसे काल कहते हैं । काल तीन हैं - भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल ।

Q. काल के विभिन्न भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए ।

a: भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाय कि क्रिया की समाप्ति हो चुकी है, उसे भूतकाल कहते हैं ।
उदा : लडका आया था, उसने पाठ लिखा, वे आ गये ।

इसके सात भेद हैं -

1) सामान्य भूतकाल	--	चला, सुना
2) आसन्न भूतकाल	--	चला है, सुना है
3) पूर्ण भूतकाल	--	चला था, सुना था
4) अपूर्ण भूतकाल	--	चलता था, सुनता था
5) तात्कालिक अपूर्ण भूतकाल	--	चल रहा था, सुन रहा था
6) संदिग्ध भूतकाल	--	चला होगा, सुना होगा
7) हेतु हेतुमद् भूतकाल	--	चलता, सुनता
		(आप आते तो मैं चलता। / तुम कहते तो मैं सुनता।)

वर्तमान काल : क्रिया के जिस रूप से उसका वर्तमान में होना पाया जाये, उसे वर्तमान काल कहते हैं । इसके तीन भेद हैं –

1) सामान्य वर्तमान काल -- लिखता है, आता है

2) तात्कालिक वर्तमान काल -- लिख रहा है, आ रहा है

3) संदिग्ध वर्तमान काल -- लिखता होगा, आता होगा ।

भविष्यत् काल : क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाये कि कार्य भविष्य में ही होनेवाला है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं । इसके दो रूप हैं –

1) सामान्य भविष्यत् काल -- मैं पढ़ूँगा, वह आएगा ।

2) संभाव्य भविष्यत् काल -- शायद वह कल विदेश जाये ।

Q. अर्थ की दृष्टि से क्रियाओं के भेदों पर प्रकाश डालिए ।

a: अर्थ की दृष्टि से क्रियाओं के तीन भेद हैं –निश्चयार्थ, सम्भावनार्थ और विध्यर्थ (आज्ञार्थ) ।

a) निश्चयार्थ :- क्रिया का वह रूप जो कार्य का निश्चय सूचित करता है ।

जैसे – लिखा (सामान्य भूत) लिखा है (आसन्न भूत)

लिखा था (पूर्ण भूत) लिखता था (अपूर्ण भूत)

लिखता है (सामान्य वर्तमान) लिख रहा है (तात्कालिक वर्तमान)

लिखेगा (सामान्य भविष्यत्)

b) संभावनार्थ :- क्रिया का वह रूप जो कार्य का अनिश्चय, अनुमान, सन्देह, कामना आदि की सूचना करता है ।

उदा :- लिखा हो (सामान्य भूत) लिखा होगा (संदिग्ध भूत)

लिखता होगा (संदिग्ध वर्तमान)

c) विध्यर्थ (आज्ञार्थ) :- क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य करने का आदेश,अनुरोध, आज्ञा आदि सूचित हो ।

उदा :- तू लिख, तुम लिखो, आप लिखिए

तू पी, तुम पिओ, आप पीजिए

तू ला, तुम लाओ, आप लाइए ।

Q. 'ने' प्रत्यय के प्रयोग पर टिप्पणी लिखिए ।

a: सकर्मक क्रिया भूतकाल में प्रयुक्त हो तो उसके कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है ।

उदा : उसने चावल खाया ।

'ने' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार बदलती है ।

उदा : लडके ने दो आम खाये ।

बच्ची ने रोटी खाई ।

कर्ता के साथ 'ने' और कर्म के साथ 'को' प्रत्यय लगाने पर क्रिया एकवचन पुल्लिंग में होगी।

उदा : लडके ने बच्चे को मारा ।

माँ ने सीता को देखा ।

बोल, भूल, ला क्रियाओं के आने पर कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं करते । (वैसे तीनों क्रियायें सकर्मक हैं ।)

उदा : मैं चावल लाया ।

वे सभा में बोले ।

वह यह बात भूला (भूल गया) ।

सक, चुक, लग आदि सहायक क्रियाओं के प्रयोग होने पर कर्त के साथ 'ने' नहीं लगाते हैं ।

उदा : मैं दो चिट्टियाँ लिख सका ।

वे यह काम कर चुके ।

लडके पाठ पढ़ने लगे ।

अपूर्ण भूतकालिक और हेतुहेतुमद् भूतकालिक क्रियाओं के आने पर कर्ता के साथ 'ने' नहीं लगाते हैं ।

उदा : वे घर में भाषण देते थे ।

अच्छी तरह पढ़ते तो पास होते ।

Q. इन वाक्यों के वाच्य बदलिए ।

1) रघु ने दो रोटियाँ खाईं ।

a: रघु से दो रोटियाँ खाई गयीं ।

2) बजाज साहब साडियाँ बेचते हैं ।

a: बजाज साहब से साडियाँ बेची जाती हैं ।

3) लिपिक ने आज सारे पत्र भेज दिए ।

a: लिपिक से आज सारे पत्र भेज दिये गये ।

4) केरल के सब बच्चे स्कूल में हिन्दी पढेंगे ।

a: केरल के सब बच्चों से स्कूल में हिन्दी पढ़ी जायेंगी ।

5) लंगडा आदमी उस पहाड़ पर चढ़ नहीं सकता ।

a: लंगडे आदमी से उस पहाड़ पर चढ़ा नहीं जायेगा ।

6) पुलिस से चोर पकड़ा गया ।

a: पुलिस ने चोर को पकड़ा ।

7) आपको इस बात की सूचना दी जाती है ।

a: आपको इस बात की सूचना देता है ।

8) जुकाम के कारण बच्चा साँस नहीं ले सकता ।

a: जुकाम के कारण बच्चे से साँस नहीं ली जा सकती ।

9) उसने आइना नहीं तोड़ा ।

a: उससे आइना तोड़ा नहीं गया ।

10) मंदिर में रोज़ गणेश जी की पूजा की जाती है ।

a: मंदिर में रोज़ गणेश जी की पूजा करते हैं ।

Q. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए ।

1) डाकिया ने आज पाँच चिट्ठियाँ लाई ।

a: डाकिया आज पाँच चिट्ठियाँ लाया ।

2) दादाजी बच्चों को मिठाई दिए ।

a: दादाजी ने बच्चों को मिठाई दी ।

3) क्या तुमने कल रात को खूब सोया ।

a: क्या तुम कल रात को खूब सोये ?

4) लडकों से कहानियाँ पढ़े जाते हैं ।

a: लडकों से कहानियाँ पढ़ी जाती हैं ।

5) उसने गाडी खुद चलाती थी ।

a: वह गाडी खुद चलाता था ।

6) वे राजन से पुस्तकें लिये होंगे ।

a: उन्होंने राजन से पुस्तकें ली होंगी ।

7) कल हमने आप की कार लौटायेंगे ।

a: कल हम आप की कार लौटायेंगे ।

8) उस बूढ़े से इतनी दूर चले नहीं जायेंगे ।

a: उस बूढे से इतनी दूर चला नहीं जाएगा ।

9) वासुदेव ने पिछले महीने से हिन्दी सीखने लगी ।

a: वासुदेव पिछले महीने से हिन्दी सीखने लगा ।

10) अगर आपने माँगती तो मैं ने किताब देती ।

a: अगर आप माँगते तो मैं किताब देता ।

Unit 11 - कृदन्त

Q. कृदन्त क्या है ?

a: धातुओं के साथ प्रत्यय लगाकर क्रिया से भिन्न कुछ रूप बनाते हैं, जो संज्ञा, विशेषण या अव्ययों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें कृदन्त (**Participles**) कहते हैं ।

उदा : खाना और लिखना शब्दों के कृदन्त रूप देखिए -

खानेवाला	लिखनेवाला
खाता हुआ	लिखता हुआ
खाया हुआ	पढ़ा हुआ
खाते ही	पढ़ते ही
खाकर	पढ़कर

Q. कृदन्तों के कितने भेद हैं ? सोदाहरण समझाइए ।

a: कृदन्तों के आठ भेद हैं जिनमें चार विकारी और चार अविकारी हैं । क्रियार्थक संज्ञा, कर्तृवाचक कृदन्त, वर्तमानकालिक कृदन्त, भूतकालिक कृदन्त (ये विकारी हैं), तात्कालिक कृदन्त, मध्यकालिक कृदन्त, पूर्वकालिक कृदन्त, पूर्ण-अपूर्ण कृदन्त (ये अविकारी हैं) ।

1) क्रियार्थक संज्ञा :- धातु के साथ 'ना' जोड़ने से क्रिया का जो रूप बनता है, वह क्रियार्थक संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त होता है ।

उदा :- ज़्यादा चीनी खाना अच्छा नहीं है ।
देर तक दौडना ठीक नहीं है ।
ये दोनों पुस्तकें हमें पढ़नी हैं ।
बच्चे गीत गाने लगे ।

2) वर्तमानकालिक कृदन्त :- धातु के साथ 'ता हुआ', 'ते हुए', 'ती हुई' आदि लगाकर वर्तमानकालिक कृदन्त बनाया जाता है ।

उदा :- गाती हुई लड़की, आते हुए लोग

3) भूतकालिक कृदन्त :- धातु के साथ 'आ हुआ', 'ए हुए', 'ई हुई' आदि लगाकर भूतकालिक कृदन्त बनाया जाता है ।

उदा :- पढा हुआ उपन्यास पढी हुई कविता
सुने हुए समाचार लिखी हुई कविताएँ

4) कर्तृवाचक कृदन्त :- धातु के 'करने', 'पढने' आदि रूपों के साथ 'वाला' प्रत्यय लगाकर यह रूप बनाया जाता है ।

उदा :- चलनेवाले को देखो ।
यह जल्दी काम करनेवाला लड़का है ।
मैं कल दिल्ली जानेवाला हूँ ।

5) तात्कालिक कृदन्त :- वर्तमानकालिक कृदन्त के 'करते', 'पढते' आदि रूपों के साथ 'ही' जोडकर तात्कालिक कृदन्त बनाया जाता है ।

उदा :- हमारे वहाँ पहुँचते ही बस निकल गई ।

दस बजते ही कमरा खाली हुआ ।

6) मध्यकालिक कृदन्त :- वर्तमानकालिक या भूतकालिक कृदन्त को दुहराकर मध्यकालिक कृदन्त बनाया जाता है ।

उदा :- खाते-खाते बातें भी हो सकती हैं ।

बैठे-बैठे वह लड़का सो रहा है ।

7) पूर्वकालिक कृदन्त :- क्रिया धातु के साथ 'कर', 'करके', 'के' आदि जोडकर यह रूप बनाया जाता है ।

उदा :- सबेरे पूजा करके काम करो ।

वहीं जाके पानी पियेंगे ।

वे दुपहर को खाना खाकर जाते हैं ।

8) पूर्ण-अपूर्ण कृदन्त :- वर्तमानकालिक कृदन्त जब क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो उसे अपूर्ण कृदन्त कहते हैं ।

उदा :- राम ने कृष्ण को दौडते हुए देखा ।

पैसा मांगते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती ।

भूतकालिक कृदन्त जब क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो उसे पूर्ण कृदन्त कहते हैं।

उदा :- वह लडका झोली फैलाए आ रहा था ।

बच्ची पानी में पैर लगाए बैठी थी ।

Q. 'करना' धातु का कृदन्त रूप बनाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

a:

करनेवाला	:	वह इधर आकर काम करनेवाला है ।
करता हुआ	:	चोरी करते हुए वे पकड़े गये ।
किया हुआ	:	तुम से किया हुआ काम अच्छा नहीं है ।
करते - करते	:	काम करते-करते बातें भी कर सकते हैं ।
करना है	:	तुम्हें काम करना है तो इधर बैठना है ।

Unit 12 - अव्यय

Q. अव्यय क्या है ?

a: अव्यय ऐसे शब्द को कहते हैं जिसके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता । अव्यय को अविकारी शब्द भी कहते हैं । इसके चार भेद हैं - क्रिया विशेषण, संबन्ध बोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक ।

A: क्रिया विशेषण :

Q. क्रिया विशेषण पर प्रकाश डालिए ।जिस शब्द से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रिया विशेषण की विशेषता प्रकट हो उसे क्रिया विशेषण कहते हैं ।

जैसे - राम धीरे धीरे चलता है ।

वह बहुत धीरे चलता है ।

क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं - **1**) स्थानवाचक, **2**) कालवाचक, **3**) परिमाणवाचक, **4**) रीतिवाचक ।

1) स्थानवाचक क्रियाविशेषण :- इस क्रिया विशेषण से कार्य के होने का स्थान या दिशा की सूचना होती है ।

स्थान - यहाँ, वहाँ, अन्दर, बाहर, ऊपर, नीचे आदि ।

दिशा - आगे, पीछे, सामने, इधर, उधर आदि ।

2) कालवाचक क्रियाविशेषण :- कार्य के होने के समय को यह सूचित करता है ।

समय - तब, अब, जब, आजकल, सबेरे, शाम को आदि ।

अवधि - हमेशा, लगातार, एकदम, दिनभर आदि ।

3) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण :- इस क्रिया विशेषण से कार्य के होने का परिमाण सूचित होता है ।

उदा :- इतना, उतना, थोड़ा, बहुत, कम ।

4) रीतिवाचक क्रियाविशेषण :- इससे कार्य के होने की रीति (शैली) सूचित होती है ।

निश्चय की सूचना	--	धीरे-धीरे, ऐसे-वैसे, ध्यान से, अचानक आदि ।
अनिश्चय	--	वास्तव में, सचमुच, अवश्य, ज़रूर आदि ।
निषेध	--	न, नहीं, मत ।
कारण	--	अतएव, इसलिए, क्योंकि ।

Q. निषेध वाचक क्रिया विशेषण क्या है ?

a: निषेध की सूचना के लिए जिन क्रिया-विशोषणों का प्रयोग होता है उन्हें निषेध वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं । विध्यर्थ अथवा आज्ञार्थ क्रियाओं में निषेध की सूचना के लिए 'मत' निश्चयार्थ और संभावनार्थ की क्रियाओं में निषेध के लिए 'नहीं', सामान्य तौर पर 'न' का भी प्रयोग किया जाता है।

जैसे - अरे, वहीं पर मत बैठो ।

आप उससे बातें मत कीजिए ।

मैं कुछ काम नहीं कर सकता ।

लडकी गाना नहीं गाएगी ।

ऐसा न करो, बडी तकलीफ़ होगी ।

तू रोटी न खा, चावल खा।

उसे न आम पसन्द है, न मौसम्बी ।

B: संबन्ध बोधकः

Q. संबन्ध बोधक अव्यय क्या है ?

जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का संबन्ध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाता है उसे संबन्ध बोधक अव्यय कहते हैं ।

उदा : के पास, के समान, के बिना, तक, भी आदि ।

Q. संबन्ध बोधक अव्यय के विभिन्न भेदों के उदाहरण दीजिए ।

a:

1. कालवाचक - के पहले, के बाद
2. स्थानवाचक - आगे, पीछे, नीचे, तले, सामने, निकट, पास
3. हेतुवाचक - के लिए, के निमित्त, के वास्ते, के कारण
4. दिशावाचक - की ओर, की तरफ़, के पार, के आरपार
5. विषयवाचक - के नाम, के भरोसे
6. व्यतिरेकवाचक - के सिवा, के अलावा, के बिना, के बगैर
7. साधनवाचक - के द्वारा, के ज़रिए, के खातिर
8. विनिमयवाचक - के बदले, की जगह, के पलटे
9. सादृश्यवाचक - के अनुरूप, के अनुकूल, सा, के मुताबिक
10. विरोधवाचक - के विरुद्ध, के खिलाफ, के विपरीत

C: समुच्चय बोधकः

Q. समुच्चय बोधक की परिभाषा देकर उसके विभिन्न भेदों के उदाहरण दीजिए ।

दो शब्दों या वाक्यों, या वाक्यांशों को जोड़नेवाले शब्दों को समुच्चय बोधक कहते हैं ।

उदा :- और, या, तो आदि ।

समुच्चय बोधक के निम्नांकित भेद हैं -

1. संयोजक -- और, व एवं तथा ।
2. वियोजक -- या, चाहे, अथवा, नहीं तो ।
3. विरोध वाचक -- किन्तु, परन्तु, लेकिन, मगर, वरन् ।
4. परिमाण सूचक -- इसलिए, अतएव, अतः ।
5. कारण सूचक -- क्योंकि, इसलिए ।
6. उद्देश्य सूचक -- कि, जो कि, जिससे, ताकि ।
7. संकेत सूचक -- जो-तो, यदि-तो, यद्यपि-तथापि, चाहे-परन्तु ।
8. स्वरूप वाचक -- जैसे, मानो, अर्थात्, याने ।

D: विस्मयादि बोधकः

Q. विस्मयादि बोधक से क्या तात्पर्य है ? उसके विभिन्न भेदों के उदाहरण दीजिए ।

जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, विस्मय, स्वीकृति,तिरस्कार आदि के भाव सूचित हो, उन्हें विस्मयादि बोधक कहते हैं ।

जैसे :- हाय ! अब मैं क्या करूँ ।

इसके निम्नलिखित भेद हैं –

1. हर्षसूचक -- अहा ! वाह-वाह ! शबाश ! ओह ! ओहो ।
2. शोक बोधक -- आह, ऊह, हा-हा, हाय ।
3. आश्चर्य बोधक-- वाह ! क्या ! ।
4. अनुमोदन बोधक -- हाँ, ठीक, अच्छा, अवश्य ।
5. तिरस्कार सूचक -- छिः !, हट !, अरे !, धिक् !, चुप !
6. स्वीकृति बोधक -- हाँ, जी हाँ, बहुत अच्छा ।
7. संबोधन सूचक-- अरे, रे, अजी, लो, जी, अहो ।
8. आशीर्वाद सूचक -- जीते रहो, जय हो, जियो ।

Unit 13 - उपसर्ग और प्रत्यय

Q. उपसर्ग क्या है ? सोदाहरण प्रकाश डालिए ।

a: जो शब्दांश स्वयं अर्थहीन होते हुए भी शब्द के पहले लगकर शब्द को विशेष अर्थ प्रदान करते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं ।

उदा :- उप + कार = उपकार अप + कार = अपकार वि + कार = विकार

अन्य उदाहरण

निर् + रोग = नीरोग	निर् + धन = निर्धन	निर् + देश = निर्देश
परि + पूर्ण = परिपूर्ण	परि + जन = परिजन	परि + क्रम = परिक्रम
वि + वाद = विवाद	सु + योग = सुयोग	अ + भाव = अभाव
सर + दार = सरदार	हर + दम = हरदम	बे + ईमान = बेइमान
ला + वारिस = लावारिस	हम + दर्द = हमदर्द	सत् + जन = सज्जन

Q. प्रत्यय क्या है ? सोदाहरण प्रकाश डालिए ।

a: किसी शब्द के बाद लगाकर नये शब्द बनानेवाले शब्दांशों को प्रत्यय कहते हैं । ये दो प्रकार के होते हैं – कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय ।

कृत प्रत्यय अथवा कृदन्त :- जो प्रत्यय क्रियाओं के अंत में लगाते हैं उन्हें कृतप्रत्यय अथवा कृदन्त कहते हैं । जैसे 'गाना' के साथ 'वाला' लगाकर 'गानेवाला' शब्द बनता है । उसी प्रकार 'ता' लगाकर 'नीचता', 'सुन्दरता' आदि शब्द बनाते हैं ।

तद्धित प्रत्यय :- संज्ञा, सर्वनाम आदि के साथ लगाकर नये शब्द बननेवाले प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं । जैसे 'आपा' शब्द लगाकर 'बुढ़ापा' शब्द बनाते हैं ।

अन्य उदाहरण :- 'आस' लगाने से मिठास, 'आर' से लुहार, 'दार' लगाने से चमकदार आदि ।

Unit 14 - समास

Q. समास की परिभाषा दीजिए ।

a: दो या दो से अधिक, आपस में संबन्ध रखनेवाले शब्दों के मेल से एक नया शब्द बने, उसे समास कहते है ।

जैसे - राजा + पुत्र = राजा का पुत्र = राजपुत्र
मुख + कमल = कमल जैसामुख = मुखकमल
दश + सिर = दस हैं सिर जिसके (रावण) = दशशिर

Q. समास के भेदों पर प्रकाश डालिए ।

a: समास के भेद हैं - अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीही और द्वन्द्व ।

1) अव्ययीभाव समास :- इसमें पहला शब्द प्रधान होता है ।

उदा :- यथा + विधि = यथाविधि
प्रति + दिन = प्रतिदिन

2) तत्पुरुष समास :- जिस समास में दूसरा अथवा बाद का शब्द प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहते है ।

उदा :- शरणागत = शरण को आया हुआ
तुलसीकृत = तुलसी द्वारा कृत
सिरदर्द = सिर का दर्द

3) कर्मधारय समास :- जिस समास के दोनों शब्दों के बीच विशेषण-विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान हो उसे कर्मधारय समास कहते है ।

उदा :- भलामानस = भला मनुष्य विशेषण - विशेष्य
पुरुषोत्तम = उत्तम पुरुष
चरण कमल = कमल जैसे चरण उपमेय - उपमान
विद्याधन = विद्यारूपी धन

4) द्विगु समास :- जिस कर्मधारय समास का पहला शब्द संख्यावाचक हो उसे द्विगु समास कहते है ।

उदा :- पंचवटी = पंचवटवाला स्थान
सप्तसिंधु = सप्तसिंधुओं का समूह
चौराहा = चार राहों का स्थान
त्रिलोक = तीन लोक

5) बहुव्रीही समास :- जिस समास में दोनों शब्द प्रधान न हो तो अर्थात् समस्तपद किसी भिन्नार्थ की सूच दें तो उसे बहुव्रीही समास कहते हैं ।

उदा :- पीतांबर = पीत है अंबर जिसका - विष्णु

6) द्वन्द्व समास :- जिसमें दोनों शब्द प्रधान हों उसे द्वन्द्व समास कहते हैं । इसमें शब्दों के बीच का समुच्चय बोधक अव्यय लुप्त रहता है ।

उदा :- माता-पिता = माता और पिता
लाभ-हानि = लाभ या हानि
हाथ-पाँव = हाथ और पाँव

Unit 15 - वाक्य विचार

Q. वाक्य किसे कहते हैं ?

a: अर्थवान शब्दों को इस क्रम से रखा जए कि उससे कोई पूरा विचार या भाव व्यक्त हो तो उसे वाक्य कहते हैं ।

Q. पदबन्ध क्या है ?

a: वाक्य के उस भाग को, जिसमें एक से अधिक पद परस्पर संबद्ध होकर अर्थ तो देते हैं, किन्तु पूरा अर्थ नहीं देते, पदबन्ध या वाक्यांश कहते हैं ।

उदा :- संज्ञा पदबन्ध	--	इतने घनी-मानी व्यक्ति ।
सर्वनाम पदबन्ध	--	मुझ भगवान को ।
क्रिया पदबन्ध	--	भेजा जा सकता है ।
क्रियाविशेषण पदबन्ध	--	घर से होकर ।
विशेषण पदबन्ध	--	चाँद से भी प्यारा ।
संबन्ध बोधक पदबन्ध	--	अन्दर की ओर ।
समुच्चयबोधक पदबन्ध	--	इसलिए कि
विस्मयादिबोधक पदबन्ध	--	बड़ा दुर्भाग्य ।

Q. खण्डवाक्य से क्या तात्पर्य है ?

a: कर्ता, क्रिया आदि के होने पर भी कुछ वाक्य पूरा अर्थ प्रकट नहीं करते । उनके अर्थ को पूरा करने के लिए और एक वाक्य की आवश्यकता पड़ती है । ऐसे वाक्यों को खण्डवाक्य अथवा उपवाक्य कहते हैं ।

उदा :- कल यह समाचार मिला कि शनिवार को छुट्टी है ।

Q. खण्डवाक्य कितने प्रकार के होते हैं ?

a: खण्डवाक्य तीन प्रकार के होते हैं - संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रिया विशेषण उपवाक्य।

1) संज्ञा उपवाक्य :- जो आश्रित उपवाक्य संज्ञा की तरह व्यवहृत हो उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं ।

उदा :- मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है - इसमें 'वह कहाँ है' संज्ञा उपवाक्य है ।

2) विशेषण उपवाक्य :- जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं ।

उदा :- वह आदमी, जो कल आया था, आज भी आया है - इसमें जो कल आया था विशेषण उपवाक्य है ।

3) क्रिया विशेषण उपवाक्य :- जो उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहते हैं ।

उदा :- जहाँ तुम बताओगे, वहाँ मैं आऊँगा - यहाँ 'जहाँ तुम बताओगे' क्रिया विशेषण उपवाक्य है ।

Q. अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं ?

a: अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं ।

1)	विधानार्थक वाक्य	--	केरल हमारा राज्य है ।
2)	निषेधार्थक वाक्य	--	कभी गलत काम मत करो ।
3)	प्रश्नार्थक वाक्य	--	तुम्हारा नाम क्या है ?
4)	आज्ञार्थक वाक्य	--	आप इधर आइए ।
5)	सन्देहार्थक वाक्य	--	मास्टर साहब शायद नहीं आयेंगे ।
6)	इच्छार्थक वाक्य	--	ईश्वर हमें सुखी रखे ।
7)	संकेतार्थक वाक्य	--	वे पूछते तो मैं कहता ।
8)	विस्मयादिबोधक वाक्य	-	ओह ! मेरी यह हालत कैसे हुई ?

Q. रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं ?

a: रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं ।

1) सरल वाक्य **2)** मिश्र वाक्य **3)** संयुक्त वाक्य

1) सरल वाक्य :- जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय हो उसे सरल वाक्य कहते हैं ।

जैसे - बच्चे मैदान में खेल रहे हैं ।

2) मिश्र वाक्य :- जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य के अतिरिक्त उसके अधीन कोई दूसरा अंगवाक्य हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं ।

जैसे - वह किताब, जो तुमने दी थी, अब मेरे पास नहीं है ।

3) संयुक्त वाक्य :- जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल अथवा मिश्रित वाक्य एक दूसरे पर आश्रित न होकर योजक द्वारा जुड़े हो, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं ।

जैसे - हम चेन्नै गये और वहाँ एक महीने तक रहे ।

Q. पदक्रम क्या है ?

a: किसी वाक्य के सार्थक शब्दों को यथास्थान रखने की क्रिया को पदक्रम कहते हैं ।

पदक्रम के सामान्य नियम इस प्रकार हैं -

a) हिन्दी में कर्ता, कर्म और क्रिया, इसी क्रम में वाक्य का गठन होता है ।

जैसे - राम ने खाना खाया ।

b) वाक्य में दो कर्म होते हैं तो गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म बाद में होता है ।

जैसे - अध्यापक ने विद्यार्थी को पुस्तक दी ।

c) सर्वनाम के पहले विशेषण का प्रयोग नहीं होता, उसे सर्वनाम के बाद ही रखते हैं ।

जैसे - यह मीठा है, वह कड़वा ।

d) क्रिया-विशेषण क्रिया के पहले आता है ।

जैसे - वह तेज़ दौडता है ।

e) संबोधन और विस्मयादिबोधक रूप वाक्य के प्रारंभ में रखे जाते हैं ।

जैसे - अरे बच्चो, इधर मत खेल !

f) निषेधार्थक शब्द क्रिया से पहले आते हैं ।

जैसे - हम वहाँ नहीं खेलेंगे ।

Q. वाक्य में अन्वय का क्या स्थान है ?

a: वाक्य में लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि के अनुसार पदों का क्रम होता है । इस क्रम के न होने पर वांछित अर्थ की सिद्धि नहीं होती ।इस तरह के पदक्रम को अन्वय या मेल कहते हैं।

उदा :- कर्ता और क्रिया का मेल - मोहन और सोहन सोते हैं । बाघ और बकरी एक ही घाट पर पानी पीते हैं ।
कर्म और क्रिया का मेल - लडके ने लडकी को ध्यान से देखा । मोहन ने दो किताबें और एक थैली खरीदीं ।

संज्ञा और सर्वनाम का मेल - लडके वे ही हैं । लड़कियाँ भी ये ही हैं ।

Q. मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य में क्या अंतर है ?

a: मिश्र वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक या एक से अधिक उपवाक्य होते हैं । संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजक के द्वारा जुड़े रहते हैं ।

मिश्र वाक्य - वह किताब, जो तुमने पढ़ी थी, मेरे पास नहीं है ।
संयुक्त वाक्य - लडके स्कूल से वापस आये और वे मैदान में गेंद खेलने गये ।

Unit 16 - भाषा का शुद्ध रूप

A. का, के, की का शुद्ध प्रयोग :

शुद्ध कीजिए ।

Q: **1)** मेरा बहन आज स्कूल नहीं गई ।

a: मेरी बहन आज स्कूल नहीं गई ।

2) सुशीला की भाई का नाम गोविन्द है ।

a: सुशीला के भाई का नाम गोविन्द है ।

3) राम का बहिन का नाम सुलोचना है ।

a: राम की बहिन का नाम सुलोचना है ।

4) उस लडकी राजन का बहिन है ।

a: वह लडकी राजन की बहिन है ।

5) मेरा भाई का बेटी का नाम लीला है ।

a: मेरे भाई की बेटी का नाम लीला है ।

6) मेरा घोड़ा का दाम दो हज़ार रुपया है ।

a: मेरे घोड़े का दाम दो हज़ार रुपए हैं ।

7) गोपाल का विद्यालय में एक सुन्दर बगीचा है ।

a: गोपाल के विद्यालय में एक सुन्दर बगीचा है ।

8) उसका बहिन मेरे साथ आया था ।

a: उसकी बहिन मेरे साथ आयी थी ।

9) सड़क के दोनों ओर देखनेवालों का भीड़ है ।

a: सड़क के दोनों ओर देखनेवालों की भीड़ है ।

10) वह तालाब की पानी अच्छी नहीं है ।

a: उस तालाब का पानी अच्छा नहीं है ।

11) मैं तुमको एक बात बोलना चाहता हूँ ।

a: मैं तुमसे एक बात बोलना चाहता हूँ ।

12) वह मुझको विश्वास नहीं करता ।

a: वह मुझ पर विश्वास नहीं करता ।

13) मैं ने कल पंडित जी को मिला ।

a: मैं कल पंडित जी से मिला ।

14) कई विद्यार्थियों परीक्षा को नहीं बैठे ।

a: कई विद्यार्थी परीक्षा में नहीं बैठे ।

15) पिताजी उसको बाज़ार जाने को कह दिया ।

a: पिताजी ने उससे बाज़ार जाने को कह दिया ।

16) हम पेडों को आदर करना चाहिए ।

a: हमें पेडों का आदर करना चाहिए ।

17) हमारा सेना सीमाओं को रक्षा कर रहा है ।

a: हमारी सेना सीमाओं की रक्षा कर रही है ।

18) नागरिक अपने देश को सेवा करना चाहिए ।

a: नागरिक को अपने देश की सेवा करनी चाहिए ।

19) मुझे एक भाई है ।

a: मेरा एक भाई है ।

20) उसको कितनी बहनें है ।

a: उसके कितनी बहनें है ।

21) उस मनुष्य को एक आँख नहीं है ।

a: उस आदमी को एक आँख नहीं है ।

22) बैल को दो सींगें हैं ।

a: बैल के दो सींगें हैं ।

23) दीवार को भी कान होते हैं ।

a: दीवार के भी कान होते हैं ।

24) वह स्कूटर पर यहाँ आया ।

a: वह स्कूटर से यहाँ आया ।

25) तुम रेलगाडी में जाओगे या बस में ?

a: तुम रेलगाडी से जाओगे या बस से ?

B. सर्वनाम **+** विभक्ति प्रत्यय :

26) आप कौन गाँव से आ रहे हैं ?

a: आप किस गाँव से आ रहे हैं ?

27) कोई ने यह बात नहीं कहा ।

a: किसी ने यह बात नहीं कही ।

28) तुम के लिए मैं इस काम करूँगा ।

a: तुम्हारे लिए मैं यह काम करूँगा ।

29) वह घर में आप मत जाओ ।

a: उस घर में आप मत जाइए ।

30) उन लोग कब पूना जाना है ?

a: उन लोगों को कब पूना जाना है ?

C. चाहिए, हो, पड़ :

31) हम सब हिन्दी सीखना चाहिए ।

a: हम सब को हिन्दी सीखनी चाहिए ।

32) तुम तुम्हारा किताब ले जाना चाहिए ।

a: तुम्हें अपनी किताब ले जानी चाहिए ।

33) तुम यह कविता नहीं पढ़ना पड़ेगा ।

a: तुम्हें यह कविता नहीं पढ़नी पड़ेगी ।

34) मैं कल ज़रूर गाँव जाना है ।

a: मुझे कल ज़रूर गाँव जाना है ।

35) बद्रीनाथ के दर्शन के लिए आप पहाड़ पर चढने होंगे ।

a: बद्रीनाथ के दर्शन के लिए आप को पहाड़ पर चढना होगा ।

36) मैं मेरी कहानी सुनाऊँगा ।

a: मैं अपनी कहानी सुनाऊँगा ।

37) हम हमारे देश को प्यार करना चाहिए ।

a: हमें अपने देश को प्यार करना चाहिए ।

38) तुम्हारा नाम कागज़ पर लिखिए ।

a: तुम्हारा नाम कागज़ पर लिखो ।

39) वह उसकी बहन के साथ सिनेमा देखने जा रहा है ।

a: वह अपनी बहन के साथ सिनेमा देखने जा रहा है ।

40) मैं मेरे घर जा रहा हूँ, तुम तुम्हारे घर जाओ ।

a: मैं अपना घर जा रहा हूँ, तुम अपने घर जाओ ।

D. कृदन्त :

41) वह आते ही मैं जाएगा ।

a: उसके आते ही मैं जाऊँगा ।

42) मैं यहाँ आकर चार दिन हुए ।

a: मेरे यहाँ आये चार दिन हुए ।

43) वह मुझसे बिना कहकर चला गया ।

a: वह मुझसे कहे बिना चला गया ।

44) हम स्कूल में आकर दो घंटा हुआ ।

a: हमारे स्कूल में आए दो घंटे हुए ।

45) मैं स्टेशन पहुँचते ही गाडी छूट गई ।

a: मेरे स्टेशन पहुँचते ही गाडी छूट गई ।

46) हम पढ़ते समय तुम चुप रहना चाहिए ।

a: हमारे पढ़ते समय तुम्हें चुप रहना चाहिए ।

47) यह किताब छपकर दो साल हुए ।

a: इस किताब को छपकर दो साल हुए ।

48) अध्यापक आते ही विद्यार्थियों ने खड़े हो गये ।

a: अध्यापक के आते ही विद्यार्थी खड़े हो गये ।

49) आप आने पर बच्चे खाना खाए।

a: आप के आने पर बच्चों ने खाना खाया ।

50) मैं देखते देखते बच्चा सीढ़ियों से गिर पड़ा ।

a: मेरे देखते देखते बच्चा सीढ़ियों से गिर पड़ा ।

E. लिंग :

51) बरगद के नीचे सभाएँ हो रहे हैं ।

a: बरगद के नीचे सभाएँ हो रही हैं ।

52) नया गाय कितना दूध देता है ?

a: नयी गाय कितने दूध देती है ?

53) प्रेमचन्द की उपन्यासें बहुत रसीली हैं ।

a: प्रेमचन्द के उपन्यास बहुत रसीले हैं ।

54) यह बड़ा घर में बहुत आदमियाँ रहते हैं ।

a: इस बड़े घर में बहुत आदमी रहते हैं ।

55) मेरा कॉलेज में दो हज़ार विद्यार्थियाँ पढ़ते हैं ।

a: मेरे कॉलेज में दो हज़ार विद्यार्थी पढ़ते हैं ।

F. सक, चाह, लग :

56) मुझको आज गाना नहीं सकता है ।

a: मैं आज गा नहीं सकता ।

57) मेरा भाई को खूब तैरना सकता है ।

a: मेरा भाई खूब तैर सकता है ।

58) गोपाल को तुमके साथ आने को नहीं सकता ।

a: गोपाल तुम्हारे साथ आ नहीं सकता ।

59) क्या तुम जलेबी खानी चाहते हो ?

a: क्या तुम जलेबी खाना चाहते हो ?

60) उसके दो भाई डॉक्टर बनने चाहते हैं ।

a: उसके दो भाई डॉक्टर बनना चाहते हैं ।

61) उन्होंने कविताएँ लिखना चाहा ।

a: उन्होंने कविताएँ लिखनी चाहीं ।

62) वे छोटे बच्चे ज़ोर से रो लगे ।

a: वे छोटे बच्चे ज़ोर से रोने लगे ।

63) क्या तुम आज से हिंदी सीखनी लगोगे ?

a: क्या तुम आज से हिंदी सीखने लगोगे ?

64) गोपाल की बात सुनकर गोमती हँसनी लगी ।

a: गोपाल की बात सुनकर गोमती हँसने लगी ।

65) हम लोग रघु की कहानी सुनने चाहे ।

a: हम लोगों ने रघु की कहानी सुननी चाही ।

G. ने प्रत्यय :

66) लड़की ने कौन किताब लाई ?

a: लड़की कौन-सी किताब लाई ?

67) वह लड़का रात को मार खाया ।

a: उस लड़के ने रात को मार खायी ।

68) तुलसी हिन्दी में रामायण लिखा है ।

a: तुलसी ने हिन्दी में रामायण लिखी है ।

69) मैं ने झूठ नहीं बोला ।

a: मैं झूठ नहीं बोला ।

70) शारदा पाठ कब सीखी ?

a: शारदा ने पाठ कब सीखा ?

71) मुझके लिए बाप ने यह किताब लाई ।

a: मेरे लिए बाप यह किताब लाये ।

72) डाकिया ने चिट्ठियाँ लाया ।

a: डाकिया चिट्ठियाँ लाया ।

73) केशव मुझे दो आम दिया ।

a: केशव ने मुझे दो आम दिये ।

74) उन्होंने बाज़ार से बहुत सारी चीज़ें लाई ।

a: वे बाज़ार से बहुत सारी चीज़ें लाये ।

75) शंकर विष पी ली और नीलकंठ कहलाया ।

a: शंकर ने विष पी लिया और नीलकंठ कहलाया ।

76) उसकी किताब मैं ने ही ले आई थी ।

a: उसकी किताब मैं ही ले आया था ।

77) अंग्रेज़ी लोग भारत पर शासन किया ।

a: अंग्रेज़ी लोगों ने भारत पर शासन किया ।

78) आप से लिखा हुआ लेख मैं पढ़ा था ।

a: आप से लिखा हुआ लेख मैं ने पढ़ा था ।

79) आपने कहते तो मैं यह काम ज़रूर करता ।

a: आप कहते तो मैं यह काम ज़रूर करता ।

80) बच्चे ने रोटी को फेंक दी ।

a: बच्चे ने रोटी फेंक दी ।

H. विशेष प्रयोग :

81) वह काम करके थक हो गया ।

a: वह काम करके थक गया ।

82) उसकी स्त्री बीमार थी, उससे वह घबरा हो गया ।

a: उसकी स्त्री बीमार थी, इसलिए वह घबरा गया ।

83) सिंह को देखकर वह डर हो गया ।

a: सिंह को देखकर वह डर गया ।

84) अभिमन्यु के सामने शत्रु सेना खडा नहीं सका ।

a: अभिमन्यु के सामने शत्रु सेना खडी न रह सकी ।

85) मैं ने पिताजी से एक रुपया खरीदा ।

a: मैं ने पिताजी से एक रुपया माँगा ।

86) सीता ने माँ से एक साडी पूछी ।

a: सीता ने माँ से एक साडी माँगी ।

87) गोविन्द आज ही सिनेमा देखना माँगता है ।

a: गोविन्द आज ही सिनेमा देखना चाहता है ।

88) गेंद मिलाकर लडका बहुत खुशी हुआ ।

a: गेंद मिलने से लडका बहुत खुश हुआ ।

89) तुम यह काम ज़रूरी करना चाहिए ।

a: तुम्हें यह काम ज़रूर करना चाहिए ।

90) कब मैं वहाँ गया तब उस समाचार मिला।

a: जब मैं वहाँ गया तब वह समाचार मिला।

91) कौन बडा काम करता है, वही बडा है ।

a: जो बडा काम करता है, वही बडा है ।

92) तुम कैसा खाना बनाती हो, वैसा मैं नहीं बनाती ।

a: तुम जैसा खाना बनाती हो, वैसा मैं नहीं बनाती ।

93) गोपाल को हिन्दी नहीं जानता ।

a: गोपाल को हिन्दी नहीं मालूम । / गोपाल हिन्दी नहीं जानता ।

94) क्या तुम पंजाबी मालूम हो ?

a: क्या तुम्हें पंजाबी मालूम है ?

95) वह हिंदी गाना बहुत पसन्द है ।

a: उसे हिंदी गाना बहुत पसन्द है ।

96) उसकी बहीन बड़ी चालाकी लडकी है ।

a: उसकी बहिन बड़ी चालाक लडकी है ।

97) दो दिन से ललिता बीमारी है ।

a: दो दिन से ललिता बीमार है ।

98) केवल कहने मात्र से कोई काम नहीं बनता ।

a: कहने मात्र से कोई काम नहीं चलता ।

I. वाच्य बदलिए :

a) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में बदलकर लिखिए :-

1) पुलिस ने चोर को पकड़ा ।

a: पुलिस से चोर पकड़ा गया ।

2) उन्होंने दो कहानियाँ पढ़ीं ।

a: उनसे दो कहानियाँ पढ़ी गयीं ।

3) मेरे पिताजी कलकत्ता से साडियाँ लाए ।

a: मेरे पिताजी से कलकत्ता से साडियाँ लायी गयीं ।

4) राजाराम मोहनराय ने कई भाषाएँ सीखीं ।

a: राजाराम मोहनराय से कई भाषाएँ सीखी गयीं ।

5) तुलसी ने कवितावली की रचना की ।

a: तुलसी से कवितावली की रचना की गयी ।

6) मैं ने कल सिनेमा देखा ।

a: मुझसे कल सिनेमा देखा गया ।

7) लड़कियाँ फूल तोड़ती है ।

a: लड़कियों से फूल तोड़ा जाता है ।

8) माँ बच्चे को फल देती है ।

a: माँ से बच्चे को फल दिया जाता है ।

9) हम कल नई घडी खरीदेंगे ।

a: हम से कल नई घडी खरीदी जाएगी ।

10) येशुदास कल रेडियो में गायेंगे ।

a: येशुदास से कल रेडियो में गाया जाएगा ।

11) केरल के स्कूलों में अनिवार्य रूप से हिन्दी सिखाते हैं ।

a: केरल के स्कूलों में अनिवार्य रूप से हिन्दी सिखाई जाती है ।

12) भारत के लोग गाय की पूजा करते हैं ।

a: भारत के लोगों से गाय की पूजा की जाती है ।

13) यहाँ गरीबों को मुफ्त में दवा देते हैं ।

a: यहाँ गरीबों को मुफ्त में दवा दी जाती है ।

14) हम उनको पैसा देंगे ।

a: हम से उनको पैसा दिया जाएगा ।

15) वह आज यह काम पूरा करेगी ।

a: उससे आज यह काम पूरा किया जाएगा ।

b) कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में बदलकर लिखिए :-

16) उत्तर भारत में रोटी ही खाई जाती है ।

a: उत्तर भारत में रोटी ही खाते हैं ।

17) ड्राइवर से गाडी तेज़ चलाई गई ।

a: ड्राइवर ने गाडी तेज़ चलाई ।

18) पुरोहित जी से मंत्रपाठ किया जाएगा ।

a: पुरोहित जी मंत्रपाठ करेंगे ।

19) प्रेमचन्द जी से बारह उपन्यास लिखे गये ।

a: प्रेमचन्द जी ने बारह उपन्यास लिखे ।

20) मुझसे कहानी सुनाई जाएगी ।

a: मैं कहानी सुनाऊँगा ।

21) शारदा से तीन हिन्दी गीत गाए गये ।

a: शारदा ने तीन हिन्दी गीत गाए ।

22) गोपाल से पूरा पैसा लिया गया ।

a: गोपाल ने पूरा पैसा लिया ।

23) हमसे बडों का आदर किया जाता है ।

a: हम बडों का आदर करते हैं ।

24) चाचाजी से अध्यापक के नाम पत्र भेजा गया ।

a: चाचाजी ने अध्यापक के नाम पत्र भेजा ।

25) राधा से दो सेर दूध लाया गया ।

a: राधा दो सेर दूध लायी ।

26) रवि वर्मा से चित्र बनाये गये।

a: रवि वर्मा ने ये चित्र बनाये ।

27) पिताजी से मुझे रुपया नहीं दिया गया ।

a: पिताजी ने मुझे रुपया नहीं दिया ।

28) धोबी से आज काफी कपडे धोए गये ।

a: धोबी ने आज काफी कपडे धोए ।

29) रघु से नौकरानी बुलाई गयी ।

a: रघु ने नौकरानी को बुलाया ।

30) राजाजी से अंग्रेज़ी में ही बोला जाता था ।

a: राजाजी अंग्रेज़ी में ही बोलते थे ।

c) कर्तृवाच्य से भाववाच्य में बदलकर लिखिए :-

31) लड़का पेड़ पर चढ़ता है ।

a: लड़के से पेड़ पर चढ़ा जाता है ।

32) लड़कों के होस्टल में सब दस बजे सोते हैं ।

a: लड़कों के होस्टल में सबों से दस बजे सोया जाता है ।

33) हम सर्दी में बडे तडके उठ नहीं सकते ।

a: हम से सर्दी में बडे तडके उठाया नहीं जाता ।

34) आज मच्छर बहुत ज़्यादा है, इसलिए रात को सोया नही सकेंगे ।

a: आज मच्छर बहुत ज़्यादा है, इसलिए रात को सोया नहीं जायेगा ।

35) वह मेरे साथ नहीं बैठा, इसलिए उसकी बडी हानि हुई ।

a: उससे मेरे साथ बैठा नहीं गया, इसलिए उसकी बडी हानि हुई ।

36) मैं लगातार चार घंटे गाडी में नहीं बैठ सकते ।

a: मुझसे लगातार चार घंटे गाडी में बैठा नहीं जाता ।

37) गाडी तेज़ चल रही थी, मैं उतर नहीं सका ।

a: गाडी तेज़ चल रही थी, मुझसे उतरा नहीं गया ।

38) वर्षा हो रही है, खिलाडी मैदान में दौड़ नहीं सकेंगे ।

a: वर्षा हो रही है, खिलाडियों से मैदान में दौडा नहीं जाएगा ।

39) आदमी आकाश में उड़ तो नहीं सकता ।

a: आदमी से आकाश में उड़ा नहीं जाता ।

40) बीमार आदमी एक कदम भी नहीं चल सकता ।

a: बीमार आदमी से एक कदम भी चलाया नहीं जाता ।

d) भाववाच्य से कर्तृवाच्य में बदलकर लिखिए :-

41) कडी सर्दी में रजाई के बिना सोया नहीं जाता ।

a: कडी सर्दी में रजाई के बिना सो नहीं सकता ।

42) बच्ची इतनी बीमार थी कि उससे रोया भी नहीं जाता था ।

a: बच्ची इतनी बीमार थी कि वह रो भी नहीं सकती थी ।

43) मुझसे इतने गहरे पानी में उतरा नहीं जाएगा ।

a: मैं इतने गहरे पानी में उतर नहीं सकूँगा ।

44) पेट में इतना दर्द हो रहा है कि हँसा भी नहीं जाता ।

a: पेट में इतना दर्द हो रहा है कि हँस भी नहीं सकता ।

45) भालू से पेड पर चढ़ा नहीं जाएगा ।

a: भालू पेड पर चढ़ नहीं सकेगा ।

46) केरल के लोगों से रोज़ सबेरे नहाया जाता है ।

a: केरल के लोग रोज़ सबेरे नहाते हैं ।

47) मुझसे समुद्र में तैरा नहीं जाएगा ।

a: मैं समुद्र में तैर नहीं सकूँगा ।

48) हम से रेल से इतनी दूर चला नहीं जाएगा ।

a: हम रेल से इतनी दूर नहीं चल सकेंगे ।

49) राजू की कड़ी बातें सुनकर मुझसे रहा नहीं गया ।

a: राजू की कड़ी बातें सुनकर मैं नहीं रह सकता ।

50) क्या तुम से इतनी तेज़ जाया जाएगा ?

a: क्या तुम इतनी तेज़ जाओगे ?

Unit 17 हिंदी भाषा

Q: हिंदी शब्द की उत्पत्ति पर प्रकाश डालते हुए उसके विकास पर प्रकाश डालिए ।

a: 'हिंदी' शब्द हिन्दी भाषा का या खडीबोली का नहीं है । इसकी उत्पत्ति 'सिन्धु' (संस्कृत) से हुई है (सिन्धु -सिन्ध -हिन्द)। 'सिन्धु' पुराने भारत की एक नदी का नाम है । फारसी में सिन्धु को 'हिन्दु' कहते हैं । सिन्धु नदी का देश 'हिन्द' या 'हिन्दुस्तान' कहलाया । फारसी भाषा के अनुसार हिन्द देश के निवासी 'हिन्दी' कहलाये । इस तरह 'हिन्दी' शब्द की उत्पत्ति 'हिन्द देश के वासियों' के अर्थ में हुई । आगे चलकर यह शब्द हिन्द की भाषा के अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगा । अमीर खुसरो की 'खालिकबारी' में अनेक बार 'हिंदी' और 'हिन्दवी' शब्दों का प्रयोग हुआ है । हिंदी में ईरानी का 'ईक' प्रत्यय लगाने से 'हिंदीक' शब्द बना जिसका तात्पर्य है 'हिन्द का' । हिंदीक शब्द से यूनानी शब्द 'इंदिका' और वहीं से 'इंडिया' (अंग्रेज़ी) बना है, ऐसा कहा जाता है । विद्वानों के मतानुसार 'हिंदीक' से 'क' अक्षर के लोप हो जाने से 'हिंदी' शब्द बना है ।

हिंदी के विभिन्न नाम

हिंदी के कई अन्य नाम जो समय समय पर प्रचलित हुए हें उनमें हिन्दवी, रेख्ता, रेख्ती, दक्खिनी, गूजरी, खडीबोली, हिन्दुस्तानी, आर्यभाषा और राष्ट्रभाषा आदि ऐसे नाम हैं जिनका प्रयोग हिन्दी के अर्थ में, उसकी विशिष्ट शैली या बोली के रूप में या उसके मिले-जुले रूप में यदा-कदा किया गया है ।

हिंदी के अन्य नामों 'हिन्दवी', अति प्राचीन है । 'हिन्दुई' शब्द से 'हिन्दुओं की भाषा' तथा 'हिन्दवीं' से 'हिन्द की भाषा' का ज्ञान होता है । मध्यदेश में विकसित जिस भाषा में अरबी-फारसी के शब्दों का अभाव था उसे 'हिन्दवी' अथवा 'हिन्दुई' की संज्ञा दी गयी ।

डॉ. सुनीतिकुमार चैटर्जी के अनुसार 'हिन्दुवी' अथवा 'हिन्दवी' पश्चिमी हिंदी की बोलियों से विकसित है तथा मुसलमानों की पंजाबी भाषा से, प्रभावित एक अदृष्ट रूप में निर्मित हुई भाषा है । 'हिन्दवी' का विकास 'शैरसेनी' अपभ्रंश से हुआ तथा उसका प्रयोग मध्यदेश में सहज रूप से होता गया ।

'रेख्ता' शब्द का प्रयोग हिन्दी के बाद हिन्दी की एक विशेष शैलीगत भाषा के अर्थ में हुआ है । मूलतः यह शब्द फारसी का है और इसका शब्दार्थ है गिरी-पडी अथवा मिली-जुली । जब हिन्दी में फारसी के शब्दों का अधिक मिश्रण हुआ तो वह 'रेख्ता' कहलायी । इसके साथ 'रेख्ती' शब्द का भी प्रयोग मिलता है । वस्तुतः 'रेख्ता' शब्द पुरुषों की भाषा के अर्थ में और 'रेख्ती' स्त्रियों की भाषा के अर्थ में प्रयोग किया जाता था।

'दक्खिनी' शब्द का प्रयोग हिन्दी शब्द के समान दो भिन्न अर्थों, दक्षिण-निवासी तथा दक्षिण की भाषा, में किया जा सकता है । असल में यह दिल्ली के आसपास विकसित होनेवाली चौदहवीं-पन्द्रहवीं शती की खडीबोली थी, बोलचाल एवं साहित्य की भाषा के रूप में दक्षिण में इसका विकास हुआ, इसलिए वह 'दक्खिनी' कहलाई । गार्सा द तासी ने हिन्दू-मुसलमानों की मिश्रित भाषा को दक्षिण में प्रयुक्त 'दक्खिनी' माना है । वास्तव में 'दक्खिनी' दक्षिण की कोई नई भाषा न होकर उत्तर भारत की ही बोली थी । 'दक्खिनी' की शब्दावली, परंपरा तथा उसका सामान्य आधार खडीबोली (हिन्दी) है । अतः 'दक्खिनी' को हिन्दी का 'दक्षिण रूप' कहना ही उचित लगता है ।

हिन्दी का तात्पर्य खडीबोली के उस परिनिष्ठित रूप से है, जिसका प्रयोग आज संपूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्र में हो रहा है । साधारणतया खडीबोली किसी भी एसी बोली या भाषा को कह सकते हैं, जो खडी हो अर्थात् जो जीवित हो, पौरुषयुक्त हो और जिसमें गौरव और सौन्दर्य हो । हिन्दी में 'खडीबोली' शब्द विशिष्ट और रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त होता है । खडीबोली मूल रूप में उत्तर भारत के दिल्ली-मेरठ जनपद की पुरानी विभाषा या वर्तमान जनभाषा या लोकवाणी है । खडीबोली वह आधारभूत भाषा है जो मुख्य रूप से हिन्दी भाषी प्रदेश में साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीन शैलियों में एवं देवनागरी और फारसी दो लिपियों में लिखी जाती है और आम बोलचाल की सरल भाषा के रूप में सर्वप्रचलित है ।

हिन्दी का सामान्य अर्थ खडीबोली में उस परिनिष्ठत रूप से है जिसका प्रयोग तीनों भाषा शास्त्रीय, सामान्य और कानूनी अर्थों में किया जाता है । भाषा-शास्त्रीय आधार पर हिन्दी का तात्पर्य खडीबोली से है । अर्थात् हिन्दी का तात्पर्य देवनागरी लिपि में लिखित संस्कृत बहुल खडीबोली के रूप में ही होता है ।

सामान्य अर्थ में हिन्दी का तात्पर्य उस भाषा से है जो संपूर्ण हिन्दीभाषी क्षेत्र की परिनिष्ठित भाषा है । यह हिन्दी भाषी क्षेत्र हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार और हिमाचल प्रदेश में फैला हुआ है । परिनिष्ठित रूप के साथ अनेक बोलियाँ भी इसमें सम्मिलित हैं । यही हिन्दी आज हिन्दी भाषी क्षेत्र की शासन, शिक्षा, साहित्य, व्यापार आदि की सामान्य भाषा है । हिन्दी का एक संवैधानिक अर्थ भी है । भारतीय संविधान ने उसको राजभाषा का स्थान दिया है ।

हिंदी का विकास

मुगल शासन की स्थापना के पूर्व गुलाम, खिलजी, तुग्लक, सैयद तथा लोदी वंशों के शासन काल में उनकी मातृभाषा तुर्की, धर्मभाषा अरबी और राजभाषा फारसी थी । हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच संपर्क बढ़ जाने पर हिंदी भाषा का खूब प्रयोग होने लगा । जब अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया तो हिन्दी का प्रचार दक्षिण भारत में भी हुआ । दक्खिनी हिन्दी वहाँ बहुत दिनों तक साहित्य, शासन एवं विचार-संपर्क की भाषा बनी रही । धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए मुस्लिम शासन काल में निर्गुण पंथी संतों एवं वैष्णव धर्मावलंबियों ने हिन्दी की विविध बोलियों का प्रयोग किया। सूफी सन्त भी उत्तर-दक्षिण दिशाओं में जनता की वाणी हिन्दी में उपदेश देते थे । उत्तर एवं दक्षिण भारत के तीर्थयात्री आदान-प्रदान के लिए हिन्दी का प्रयोग करते थे । व्यापारिक केन्द्रों के संपर्क में आनेवाले व्यापारी भी लेन-देन के लिए हिन्दी का ही प्रयोग करते थे । मुगल शासन काल में हिन्दी भाषा एवं साहित्य को खूब प्रोत्साहन मिला था । सह राजभाषा के रूप में दरबारों में हिन्दी का प्रयोग होता था । अक्बर जैसे बादशाहों ने हिन्दी में साहित्य रचने के लिए प्रोत्साहन दिया था ।

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना से हिन्दुस्तानी को खूब प्रोत्साहन मिला । हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष जॉन गिलक्राइस्ट ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये । हिन्दी को असली संपर्क भाषा का रूप देने में ईसाई मिशनरियों ने खूब योग दिया । ईसाई पादरियों ने शिक्षा के लिए सरल हिन्दी को अपनाया । उन्होंने प्रेस एवं स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना की, बाइबिल का अनुवाद हिन्दी में किया, पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया, इनके लिए हिन्दुस्तानी को माध्यम बनाया ।

ब्रिटीश शासन काल में स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाने और जनता को जागृत करने के लिए जन-संपर्क का माध्यम हिन्दी को अपनाया । राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ हिन्दी आन्दोलन भी शुरू हुआ । आर्य समाज, ब्रह्म समाज जैसी संस्थाओं ने अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए हिन्दी को अपनाया । अपने विचारों के व्यापक प्रचार के लिए उन्होंने जो पुस्तकें छपवाई, वे अधिकांश हिन्दी में थीं । दयानन्द सरस्वती ने संपूर्ण भारत का भ्रमण करते हुए यह महसूस किया कि हिन्दी ही ऐसी एक भाषा है जिसके माध्यम से देश के किसी भी कोने में आर्य समाज का संदेश सुनाया जा सकता है । दक्षिण भारत के प्रान्तों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए गाँधीजी ने स्तुत्य प्रयास किया । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने निर्णय लिया था कि उसकी कार्यवाही आम तौर पर हिन्दुस्तानी में चलेगी । 1927 में गाँधीजी के नेतृत्व में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना हुई ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने हिन्दी को राजभाषा का पद प्रदान किया । सामासिक संस्कृति की सशक्त वाहिका के रूप में उसको विकसित करने के लिए प्रावधान भी रखा । सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों और अन्य संस्थाओं में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक कार्यक्रम तैयार किए । तदनुसार राजभाषा के रूप में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है । आज वह विश्वभाषा के रूप में विकसित हो रही है । संसार के बहुत बडे भूभाग में हिन्दी बोली और पढ़ी जाती है । संसार की भाषाओं में हिन्दी को तीसरा स्थान प्राप्त है । भारत के बाहर सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है । इस तरह भारतीय जनमानस की यह संपर्क सेतु हिंदी अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर विश्वास, मान्यता एवं लोकप्रियता अर्जित कर रही है ।

Q: हिंदी की विभिन्न शैलियों पर प्रकाश डालिए ।

a: हिंदी का विकास खडीबोली से हुआ है । अनेक बोलियों और भाषाओं का योगदान भी इसके विकास में हुआ है । संस्कृत हमारी संस्कृति की भाषा है, वह हिन्दी की माँ है । उसी प्रकार अरबी - फारसी भाषाओं ने भी हिन्दी के विकास के लिए अपना-अपना योगदान दिया है । इस दृष्टि से हिन्दी की चार शैलियाँ देखी जा सकती हैं - **1**. संस्कृत-निष्ठ शैली, **2**. अरबी-फारसी मिश्रित शैली, **3**. सामान्य बोलचाल की हिंदी और **4**. अंग्रेज़ी मिश्रित हिंदी ।

संस्कृत-निष्ठ हिन्दी में संस्कृत शब्दों की प्रधानता रहती है । अरबी - फारसी मिश्रित शैली में अरबी और फारसी भाषाओं के शब्दों की भरमार है । संस्कृत और अरबी - फारसी के तद्भव शब्दों का ज़्यादा प्रयोग बोलचाल की हिन्दी में होता है । इसको हिन्दुस्तानी अथवा 'हिर्दू' कहते हैं । अंग्रेज़ी मिश्रित हिन्दी में अंग्रेज़ी के शब्द बडी मात्रा में प्रयुक्त करते हैं जिसको 'हिंग्लिश' कहते हैं ।

हिन्दी और उर्दू में बडा अंतर तो नहीं है । वैसे कुछ विद्वान लोग कहते हें कि उर्दू हिन्दी की एक शैली मात्र है । उसका कलेवर अरबी - फारसी का है तो व्याकरण या रूपरचना हिन्दी की है। उर्दू का जन्म तो शाहजहानाबाद में हुआ । 'उर्दू' शब्द तुर्की भाषा का है जिसका अर्थ है शाही शिबिर । उर्दू हिन्दी की एक विशिष्ट शैली होने के बावजूद भी उसने एक विशिष्ट साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपरा का निर्माण किया है । भाषाई दृष्टि से हिन्दी और उर्दू दोनों रूप एक ही भाषा की दो शैलियाँ हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिन्दुस्तानी की विशिष्ट भूमिका रही थी । गाँधीजी ने इसका प्रयोग भारत की आम-फहम की भाषा के रूप में किया था।

Q: संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा से क्या तात्पर्य है ?

a: 'संपर्क भाषा' उस भाषा को कहते हैं जो किसी क्षेत्र, प्रदेश या देश के ऐसे लोगों के बीच आपसी विचार-विनिमय के माध्यम का काम करे जो एक दूसरे की भाषा नहीं समझते । अंग्रेज़ी में इसको 'लिंक लैंग्वेज' कहते है । संपर्क भाषा उसी का अनुवाद है । ऐसी भाषा की ज़रूरत भारत जैसे देशों में बहुत ही अधिक है जो बहुभाषी है । जब कोई भाषा संपर्क भाषा के रूप में उभरती है तो वह राष्ट्रीयता से प्रेरित होकर प्रभुतासंपन्न भाषा बन जाती है । राष्ट्रीयता राष्ट्र के भावात्मक पक्ष को उजागर करती है । अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हिन्दी अधिक व्यापक क्षेत्र में बोली जाती है, वह अधिक संपन्न और सुविकसित है । हिन्दी प्रान्तों में ही नहीं, हिन्दीतर प्रान्तों में भी हिन्दी बोल और समझ लेते हैं । शिक्षा और व्यवसाय के क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग होता है । इस दृष्टि से हिन्दी भारत की सर्वमान्य संपर्क भाषा बन सकती है ।

राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा शब्द में कोई अंतर नहीं है । राष्ट्रभाषा भी वही है जो दूसरी भाषाओं की तुलना में बहुमत लोग बोलते हैं । वस्तुतः किसी राष्ट्र अथवा देश में एक छोर से दूसरे छोर तक बोली और समझी जानेवाली भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है । यह देश में सर्वाधिक प्रचलित, विचार-संपर्क की विविध संभावनाओं से पूर्ण, उच्चकोटि के विशाल राष्ट्रीय एवं वाङ्मय से संपन्न, सरल लिपि-संयुक्त, राष्ट्र के कण-कण में देश की सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का संचार करनेवाली होती है ।

राजभाषा प्रशासनिक कामों के लिए इस्तेमाल करनेवाली भाषा है । व्यावहारिक तौर पर संपर्क भाषा का ही एक प्रमुख कार्य है, राजभाषा के रूप में उसका प्रयोग करना । अन्तर केवल इतना ही है कि संपर्क भाषा जन-साधारण व्यापिनी है और राजभाषा शासन-सूत्र तक सीमित है । इसका संबन्ध प्रशासकों, सरकारी कर्मचारियों एवं शिक्षितों से है । इस दृष्टि से ही संविधान के 343 अनुच्छेद में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया है । अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी राजभाषा है और अन्य भारतीय भाषाएँ अपने-अपने राज्यों में राजभाषा की भूमिका निभा रही हैं ।

Q: प्रयुक्ति से क्या तात्पर्य है ?

a: विभिन्न संदर्भगत और भूमिकागत प्रयोगों से व्यवहार में जो भेद पाये जाते हैं वे प्रयुक्ति कहलाते हैं । वस्तुतः प्रयुक्ति एक शैली ही है ।प्रयुक्ति में तकनीकी और वैज्ञानिकी शब्दावली की ज़रूरत पड़ती है । इसमें विशिष्ट शाब्दिक अन्विति और भाषा-संरचना भी सन्निहित रहती है ।

Q: प्रयुक्ति कितने प्रकार की है ?

a: प्रयुक्ति दो प्रकार की है, लिखित तथा मौखिक । विज्ञान की भाषा या इंजीनीयरी की भाषा मुख्यतः लिखित प्रयुक्ति के अंतर्गत आती है । रेडियो तथा दूरदर्शन के समाचारों की भाषा मौखिक होते हुए भी लिखित रूप का पठित रूप है ।

Q: तकनीकी प्रयुक्ति के अंतर्गत कौन-कौन सी बातें आती हैं ?

a: तकनीकी प्रयुक्ति के अंतर्गत भौतिकी, रासायनिकी, इंजीनीयरी, मेडिकल आदि कई उपप्रयुक्तियाँ आती हैं ।

Q: कार्यालयी साहित्य के अंतर्गत आनेवाली बातें क्या-क्या हैं ?

a: कार्यालयी साहित्य में सरकार के कार्यालयी कार्यवृत्तों का विवरण-विवेचन होता है । सरकारी पदों और कार्यकलापों को सर्वमान्य संज्ञा देना, विभिन्न नियम-विनियम बनाना, अंतरमंत्रालयी और अंतरविभागीय पत्र-व्यवहार आदि कार्यालयी साहित्य के अंतर्गत आते हैं ।

Q: कार्यालयी साहित्य की प्रकृति के आधार पर कार्यालयी भाषा के कौन-कौन से गुण होने चाहिए ?

a: कार्यालयी भाषा के चार गुण माने गए हैं - निर्वैयक्तिकता, तथ्यों में स्वपूर्णता और स्पष्टता, यथासंभव असंदिग्धता और वर्णनात्मकता ।

Q: निर्वैयक्तिकता से क्या तात्पर्य है ?

a: सरकारी आदेशों से कोई व्यक्तिगत संबन्ध नहीं होता । वह अधिकारी व्यक्तिगत रूप में कुछ न कहकर निर्वैयक्तिक रूप में कहता है, जैसे पत्र भेजा जा रहा है । पत्रादि प्रशासन की ओर से ही लिखा जाता है, इसलिए कार्यालयी भाषा में कर्मवाच्य की प्रधानता रहती है। अर्थात् इसमें कथन व्यक्ति-सापेक्ष न होकर व्यक्ति-निरपेक्ष होता है ।

Q: कार्यालयी हिन्दी की शब्दावली पर प्रकाश डालिए ।

a: कार्यालयी हिन्दी की शब्द-संपदा विभिन्न क्षेत्रों से निर्मित होती है ।

a) शब्द-निर्माण में संस्कृत को आधार के रूप में स्वीकार किया गया है । मूल धातु के साथ उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर शब्दों का निर्माण होता है - जैसे विधि शब्द से, विधायक, विधेयक, प्रावधान, संविधान, विधायिका, विधान आदि शब्दों की रचना होती है ।

b) अरबी-फारसी शब्दों का भी प्रयोग होता है जैसे - दस्तावेज, जमानत, एवजी, बर्खास्तगी आदि ।

c) अंग्रेज़ी शब्दों का भी इस्तेमाल किया जाता है जैसे - ग्रेड़, काडर, ड्यूटी, गारंटी, बॉनस, चेक आदि ।

d) हिन्दी के सामान्य बोलचाल की शब्दावलियों का प्रयोग भी मिलता है जैसे - छुट्टी, टेका, भाडा, कागज़पत्र, आढ़तिया आदि ।

e) संकर शब्दों का प्रयोग भी होता है जैसे बेबाकीपत्र, मतदान बूथ, अपर कलक्टर, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट आदि ।

f) अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे निवल (कन्नड से), पावती (मराठी से) आदि ।

Q: सामान्य भाषा और साहित्यिक भाषा में क्या अंतर है ?

a:

	सामान्य भाषा	साहित्यिक भाषा
1)	जीवन के सामान्य कार्यों में प्रयुक्त ।	सौन्दर्य तथा रसानुभूति के लिए प्रयुक्त ।
2)	सामान्य अर्थ निकलता है ।	विशेष अर्थ निकलता है ।
3)	अभिधापरक प्रयोग ज़्यादा होता है ।	लक्षणापरक और व्यंजनापरक प्रयोग अधिक होता है ।
4)	सामान्य दैनिक प्रयोजनों और कार्यकलापों के लिए प्रयुक्त होता है ।	जीवन तथा समाज के स्थायी मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए ।
5)	कोई छिपा हुआ या गूढ़ अर्थ नहीं होता ।	सतही अर्थ के नीचे कोई गूढ़ार्थ अवश्य होता है
6)	विषय या कार्यक्षेत्र विशेष होता है ।	समूचा जीवन, समाज और मानव अस्तित्व साहित्य-भाषा के विषय होते हैं ।

Q: हिन्दी के साहित्यिक रूप की क्या-क्या विशेषताएँ हैं ?

a: हिन्दी साहित्य का अध्ययन ऐतिहासिक परंपरा से जुड़ा होता है । हिन्दी का एक लंबा और समृद्ध इतिहास है । हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट रचनाओं और रचनाकारों की परंपरा का बोध पाठक या लेखक को अनायास ही हो जाता है।

हिन्दी साहित्य ने युगीन वास्तविकता को अपने में समेट रखा है । अतः बाह्य दबाव और आंतरिक मत-वैभिन्य के बावजूद भी उसे जीवंत बनाये रखने का प्रयास किया है । हिन्दी साहित्य ने अपनी परंपरा को अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास किया है । परंपरा और ऐतिहासिकता ने हिन्दी साहित्य को ठोस धरातल प्रदान किया है और जागरूकता और आधुनिकता को भी अपने में समेट रखने का प्रयास भी किया है । विभिन्न विधाओं की संपूर्णता उसमें देखी जा सकती है । सभी धर्मावलंबियों एवं विचारवालों ने उसमें अंशदान दिया है । उसकी मूलभूत विशेषता उसकी सहिष्णुता है ।

Q: कविता की भाषा की क्या विशेषता है ?

a: कविता की भाषा सामान्य भाषा होते हुए भी आलंकारिक भी होती है । इसमें भावोद्रेकता के साथ-साथ लय, बिंब और छंद-विधान भी होता है। इसमें नए भावों, नई संवेदनाओं और अनुभूतियों का व्यापक रूप होता है जो भाषायी चेतना से अभिव्यक्त होता है ।

Q: वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग पर प्रकाश डालिए ।

a: वैश्वीकरण, उदारीकरण, औद्योगीकरण, बाज़ारवाद, साक्षरता, शिक्षा के प्रसार, लघु कुटीर उद्योगों के विकास आदि से वाणिज्य और व्यवसाय की प्रयोजनमूलक भाषा के रूप हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है । व्यावसायिक प्रयुक्ति के भीतर अनेक उपप्रयुक्तियों का जन्म भी हुआ है । विभिन्न क्षेत्रों जैसे व्यापार, व्यवसाय, उद्योग, परिवहन, बैंक, कंपनी, सहकारिता, व्यावसायिक विज्ञापन, बाज़ार समाचार आदि में हिन्दी का प्रयोग होता रहता है । वाणिज्यिक और व्यावसायिक प्रयुक्ति के अनेक क्षेत्र सामान्य जन के लिए हैं, इसलिए अनकी भाषा का जनसामान्य के लिए संप्रेषणीय और बोधगम्य होना आवश्यक है। इस दृष्टि से वाणिज्यिक हिन्दी लोकभाषा और राजभाषा दोनों से जुड़ी हुई है । वाणिज्य और व्यवसाय की अपनी शब्दावली होती है तथा उद्योग, व्यापार, बैंकिंग, परिवहन, विज्ञान आदि का भी विशिष्ट प्रयोग होता है । व्यावसायिक हिंदी-शब्दावली में सामान्यतः भारतीय अर्थशास्त्र के ऋण तुष्टि, उपयोगिता, अर्थ, अल्पकालीन आदि शब्द तो होते ही हैं, साथ ही थोक, साख, लेनदार, रोकड़, दिवालिया, साझेदारी आदि शब्द भी मिल जाते हैं ।

Q: विज्ञापन की भाषा में कौन-कौन से गुण होने चाहिए ?

a: विज्ञापन की भाषा में चार बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए - आकर्षक तत्व, श्रव्यता और सुपाठ्यता, स्मरणीयता, विक्रय की शक्ति । वाक्य संरचना को आकर्षक बनाना बहुत ही आवश्यक है । सुपाठ्यता और संगीतात्मकता से परिपूर्ण होने के कारण विज्ञापन आकर्षक बन जाता है । इससे वस्तु के ब्रांड को याद रखने में सहायता मिलती है । 'याद रखिए', 'आप' जैसे शब्दों के प्रयोग से वस्तु की विक्रय-शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है । वाणिज्यिक हिंदी में शब्दावली का निर्माण विभिन्न स्त्रोतों से किया गया है । जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग - अनुदान, अपूर्ति, कटौती आदि; अंग्रेज़ी शब्दों के हिन्दी पर्याय, निर्यातोन्मुखी, पूँजी प्रवाह, संकर शब्द - कोटा निर्धारण, अतिरिक्त सप्लाई आदिं; विदेशी शब्द - अमानत, खपत, मुआवजा, पार्सल, ट्रेड मार्क आदि ।

Q: जनसंचार की भाषा का स्वरूप क्या है ?

a: जनसंचार की भाषा एक प्रयुक्ति है जो अपना विशिष्ट स्वरूप लिये होती है । समाचार पत्रों की भाषा, रेडियो की भाषा, दूरदर्शन की भाषा आदि में विज्ञापन, बाज़ार भाव, संपादकीय, फिल्म समीक्षा आदि के स्वरूप अलग अलग हैं । यह विज्ञान और मेडिकल की भाँति तकनीकी नहीं होती । यद्यपि यह साहित्यिक नहीं होती, तो आमफहम भाषा भी नहीं होती । इसकी स्थिति दोनों प्रवृत्तियों के बीच की होती है । जनसंचार की भाषा में सुबोधता, प्रयोगधर्मिता और लचीलापन होता है । जनसंचार की भाषा को सरल और सर्वग्राह्य बनाये रखने की अपेक्षा होती है । इसके अंतर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यावसायिक, क्रीडा, चलचित्र, धारावाहिक आदि सभी पक्षों को प्रस्तुत किया जाता है ।

Q: मशीनी भाषा से क्या तात्पर्य है ?

a: कंप्यूटर के माध्यम से केवल एक भाषा को बिना अनुवाद प्रोग्रामन का प्रयोग किए समझा जा सकता है । यह भाषा मशीनी भाषा अथवा कंप्यूटर की मशीनी कोड़ कहलाता है । मशीनी कोड़ कंप्यूटिंग की आधारभूत भाषा है जो सामान्यतः एक और शून्य के बीच की लड़ी से लिखी जाती है । कंप्यूटर का यह परिपथ क्षेत्र तारों से इस प्रकार बंधा होता है कि यह मशीनी भाषा को तत्काल समझ जाता है और यह विद्युत संकेतों में बदल जाता है जिसकी आवश्यकता कंप्यूटर चलाने के लिए होती है

Q: असेंबली भाषा से क्या तात्पर्य है ?

a: मशीनी भाषा में जो संख्या थी उनके स्थान पर अक्षर और संकेतों को प्रतिस्थापित किया गया है । यही असेंबली भाषा है

Q: कोबोल भाषा क्या है ?

a: कोबोल भाषा अंग्रेज़ी के **Common Business Oriented Languages** (**COBOL**) शब्दों का संक्षिप्त रूपान्तर है । मुख्य रूप से व्यावसायिक कामों के लिए इसका उपयोग किया जाता है । इस भाषा में व्यापक स्तर पर डाटा संसाधित कक्षा की क्षमता है । इसके चार विभाग हैं - परिचय विभाग, पर्यावरण विभाग, डाटा विभाग और प्रचलन विभाग ।

Q: फोरट्रान भाषा (**FORTRAN**) का परिचय दीजिए ।

a: फोरट्रान भाषा अंग्रेज़ी के **Formula Translation** शब्द का संक्षिप्त रूप है । यह विश्व की सर्वप्रथम उच्चस्तरीय प्रोग्राम भाषा है । फोरट्रान में बीज गणितीय सूत्रों का अधिकतर प्रयोग होता है ।

Unit 18 अनुवाद

Q: अनुवाद की परिभाषा दीजिए ।

a: 'अनुवाद' शब्द 'अनु' और 'वाद' शब्दों के जोड़ से बना हुआ है । अनुवाद का मूल अर्थ है – 'पुनः कथन' या 'किसी के कहने के बाद कहना' । एक भाषा की पाठ्य-सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तरति करने की प्रक्रिया को अनुवाद कहते हैं ।

Q: स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से क्या तात्पर्य है ?

a: जिस भाषा की पाठ्यसामग्री अनूदित होती है उसे स्रोत भाषा कहते हैं । जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाषा कहलाती है ।

Q: अनुवाद से संबन्धित पाँच परिभाषाओं का उल्लेख कीजिए ।

a: विद्वानों ने अनुवाद संबन्धी अनेक परिभाषाएँ दी हैं, उनमें प्रमुख पाँच इस प्रकार हैं –

1) जेसी केटफोर्ड :- "किसी एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ्यसामग्री को अन्य किसी दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में समतुल्य शब्दों के आधार पर प्रतिस्थापन करना अनुवाद है ।"

2) यूजीन.ए.नाइडा :- "स्रोत भाषा के संदेश को संग्रहक भाषा (लक्ष्य भाषा) में उसके सहज और निकटतम समतुल्य शब्दों द्वारा व्यक्त करना अनुवाद है, किन्तु इसमें पहली प्राथमिकता अर्थ को और दूसरी प्राथमिकता शैली को दी जानी चाहिए ।"

3) यूजीन.ए.नाइडा :- "किसी विषयवस्तु को एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण करना अनुवाद कहलाता है । ध्यातव्य यह है कि विषयवस्तु और रूप-विधान में सदैव भिन्नता नहीं रहनी चाहिए । दोनों में यथासंभव सामंजस्य रहना चाहिए ।"

4) भोलानाथ तिवारी :- "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है, और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन है । दूसरे शब्दों में – एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर 'कथ्य और कथन' की दृष्टि से दूसरी भाषा के समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग अनुवाद कहलाता है ।"

5) सेम्युअल जॉनसन :- "मूल के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदलना अनुवाद है ।"

इन्हीं परिभाषाओं को सामने रखकर हम कह सकते हैं कि अनुवाद निकटतम, समतुल्य और सहज भाषान्तरण अथवा यथासंभव समानक भाषांतरण प्रक्रिया है ।

Q: विचार कीजिए कि अनुवाद कला, विज्ञान या शिल्प है ?

a: अनुवाद कला है, विज्ञान है या शिल्प है - इस बात को लेकर विद्वानों के बीच मतभेद हैं । अनुवाद को कला माननेवाले विद्वान साहित्यिक दृष्टि से अपना मत यों देते हैं कि साहित्यिक कृति एक ओर मात्र संभावना होती है जिसमें कथ्य देश और काल का अतिक्रमण कर शाश्वत रूप में संयोजित होता है । साहित्यिक कृति का भाषान्तरण हो सकता है । कृति की अलौकिकता और विशिष्टता अभिव्यक्ति की उस पक्ष से जुड़ी होती है जो भाषा से मुक्त नहीं होती । अतः अनुवाद में कृति की विशिष्टता नष्ट होने की संभावना रहती है । मूल कलाकार अपने भावों को अपनी कला में उतरता है जबकि अनुवादक मूल पाठ के आधार पर सृजन करता है । मूल पाठ के कथ्य को अपनाकर अपनी सर्जनात्मक शक्ति से लक्ष्य भाषा में ढालता है और संवारता है ।

विज्ञान किसी भी विषय का व्यवस्थित तथा विशिष्ट ज्ञान होता है । इस विषय से संबद्ध बातों का व्यवस्थित वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है । अनुवाद अनुप्रायोगिक भाषा विज्ञान का एक क्षेत्र है, जिसकी चिंतन प्रक्रिया तुलनात्मक व्यतिरेकी भाषा विज्ञान पर आधारित है । स्त्रोत और लक्ष्य भाषा की ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थसंबन्धी समानताओं और असमानताओं की खोज की जाती है । अनुवाद की पृष्ठभूमि में स्थित सारा अध्ययन-विश्लेषण विज्ञान के ही अंतर्गत आता है । इस दृष्टि से अनुवाद विज्ञान भी हो सकता है । कला अैर शिल्प का सबसे बड़ा अतर यह है कि कला में व्यक्ति आत्माभिव्यक्ति करता है, शिल्प प्रायः उपयोगी कला है, उन्हें अभ्यास और शिक्षण के द्वारा अर्जित किया जा सकता है । ऐसा प्रायः देखा जाता है कि लुहार का बेटा लुहार, चित्रकार का बेटा चित्रकार बनता है । लेकिन कवि का बेटा कवि हो या चित्रकार का बेटा चित्रकार हो, यह कम ही देखा जाता है । एक सीमा तक अनुवादक कलाकार होता है । इस प्रकार अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और शिल्प भी ।

Q: अनुवाद प्रक्रिया की विभिन्न सोपानों की चर्चा कीजिए ।

a: अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपान हैं – स्त्रोत भाषा का पाठ-विश्लेषण, अंतरण और पुनर्रचना ।

1) पाठ-विश्लेषण :- अनुवाद को चाहिए कि वह पहले पहल मूल सामग्री के सही अर्थ का ग्रहण करें । पाठ्य-विश्लेषण दो स्तरों पर होता है – भाषा स्तर पर और विषय वस्तु के स्तर पर । मूल सामग्री के वाक्यों, उपवाक्यों, शब्दों आदि का विश्लेषण पहले करना है । वाक्यों की मूल संरचना का विश्लेषण करके अन्य उपवाक्यों और शब्दों के साथ उसके संबन्ध को ध्यान में रखकर अनुवाद की ओर प्रविष्ट होना चाहिए । संदर्भों के अनुरूप अर्थ को पहचानकर ही आगे बढ़ना चाहिए ।

2) अंतरण :- हर भाषा की अपनी संरचना होती है और अपना भाव जगत् होता है । संरचना और भाव-जगत संबन्धी विशेषताओं को पहचानकर ही अनुवादक को अनुवाद करना चाहिए । प्रत्येक शब्द के सांस्कृतिक और सामाजिक धरातलों को समतुल्यता के आधार पर देखना चाहिए । अर्थात् वाक्य-संरचना, पदबंध संरचना, शब्द संयोजन, ध्वनि संयोजन आदि भाषापरक समतुल्यता के साथ-साथ भावपरक समतुल्यता, शैलीपरक समतुल्यता, पाठपरक समतुल्यता के आधार पर अर्थ का अंतरण होता है, इसको भी ध्यान में रखना चाहिए ।

3) पुनर्रचना :- अनुवाद असल में एक पुनर्रचना है । लक्ष्य भाषा में स्त्रोत भाषा के अर्थ के लिए समतुल्य अर्थ का चयन करते समय वाक्य की सीमा से ऊपर उठकर पाठ के स्तर पर जाने की ज़रूरत है । लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप व्याकरणिक संबन्ध, उनके संदर्भ परक अर्थ और इन दोनों के लक्ष्यार्थ मूल्यों पर ध्यान देना ही पुनर्रचना या पुनर्गठन है ।

Q: अनुवाद के प्रकारों पर प्रकाश डालिए ।

a: अनुवाद के छः प्रकार हैं – शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद और आशु अनुवाद ।

1) शब्दानुवाद :- शब्दानुवाद में श्रोत भाषा के हर शब्द का अनुवाद लक्ष्य भाषा में भी उसी क्रम में किया जाता है । यह अनुवाद का निकृष्टतमरूप है और अर्थ का अनर्थ होने की भी संभावना रहती है।

2) भावानुवाद :- इसमें मूलपाठ के शब्द, वाक्य-रचना आदि पर ध्यान न देकर उसके भाव, अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है । भावानुवाद कभी पूरे वाक्य का, कभी उपवाक्य का, कभी पैरग्राफ का और कभी शब्द का होता है । भावानुवाद में मूल या यंत्रवत् अनुसरण नहीं रह जाता, वरन् उसमें मौलिक रचना जैसा सहज प्रभाव आता है । अनुवादक की सर्जनात्मक शक्ति इसमें प्रकट होती है । **It is raining cats and dogs** का भावानुवाद है – मूसलधार वर्षा हो रही है ।

3) छायानुवाद :- मूल सामग्री को पढ़कर, अनुवादक पर उसकी जो छाप पड़ती है, उसको लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करना ही छायानुवाद है । मूल के मुख्य भाव को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुवाद किया जाता है । अनुवाद में मूल कृति की छाया दिखाई देती है ।

4) सारानुवाद :- सारानुवाद में मूल रचना की पाठ्यसामग्री का अत्यंत संक्षिप्त, सरल और स्पष्ट अनुवाद किया जाता है । यह अनुवाद अधिक व्यावहारिक और उपयोगी होता है । लोकसभा, राज्यसभा तथा अन्य सम्मेलनों और सभाओं में प्रस्तुत किये जाने भाषणों और वक्तव्यों का सारानुवाद इसके उदाहरण हैं ।

5) व्याख्यानुवाद :- व्याख्यानुवाद में मूल कृति का अनुवाद करते हुए मुख्य विषयों की व्याख्या भी की जाती है । पाठ के अंशों के स्पष्टीकरण के लिए अतिरिक्त उदाहरण, उद्धरण, प्रमाण आदि दिये जाते हैं ।

6) आशु अनुवाद :- दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच वार्तालाप होती है तो वहाँ दुभाषिये की ज़रूरत पड़ती है । वह एक आम भाषा में उसका अनुवाद प्रस्तुत करता है । आशु अनुवादक के पास कम समय ही रहता है । उसमें अधिक अनुभव और ज्ञान की अपेक्षा की जाती है ।

Q: मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की क्या-क्या समस्यायें हैं ?

a: मुहावरे और लोकोक्तियाँ प्रत्येक भाषा की विशेष अभिव्यक्तियाँ होती हैं । स्रोत भाषा में व्यक्त इन अभिव्यक्तियों की समतुल्य अभिव्यक्तियाँ लक्ष्यभाषा में भी लाने की ज़रूरत है । समान मुहावरे और लोकोक्तियाँ लक्ष्यभाषा में उपलब्ध नहीं है तो उनमें अभिव्यक्त भावों को अनुवाद में लाना चाहिए । अर्थ की गहराई और ध्वन्यात्मकता इस तरह के भावानुवाद में कम ही आती है ।

मुहावरों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं –

अंग्रेज़ी से हिन्दी में

going to dogs	:	बरबाद होना
To beat about the bush	:	विषय से हटकर बोलना
A drop in the ocean	:	ऊँट के मुँह में जीरा
To add fuel to flame	:	आग में घी डालना
crocodile's tears	:	मगरमच्छ के आँसु
To throw mud	:	कीचड़ उछालना
To be caught red hauded	:	रंगे हाथों पकड़ा जाना

हिन्दी से अंग्रेज़ी में

आँखें बिछाना	:	**To extent a cordial welcome**
दाँत खट्टे करना	:	**To give a tough fight**
गधे को बाप बनाना	:	**To flatter a fool for expediency**

लोकोक्तियों के कुछ उदाहरण

To make mountains out of mobehills	:	राई को पर्वत बनाना ।
To laugh off	:	हँसी में उड़ा देना ।
Barkers are no bitters	:	जो गरजते हैं, बरसते नहीं ।
An ass in lion's skin	:	शेर की खाल में गधा ।
जान की बाजी लगाना	:	**To risk one's life**
एक ही थैली के चट्टे बट्टे	:	**Chips of the same block**
आकाश से गिरा, खजूर पर अटका	:	**Out of the frying pan into the fire**

Q: एक सफल अनुवादक के क्या-क्या गुण होने चाहिए ?

a: एक सफल अनुवादक के लिए प्रमुख रूप से तीन गुणों का होना अनिवार्य हैं – स्त्रोत भाषा का पूर्ण ज्ञान, लक्ष्य भाषा का पूर्ण ज्ञान और विषय का ज्ञान । अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह जिस भाषा से अनुवाद करें और जिस भाषा में करें, दोनों पर उसका समान अधिकार हो । साहित्यिक ख्याति के ग्रन्थों के लिए यह भी आवश्यक है कि उनके साथ अनुवादक का रागात्मक संबन्ध हो । विषय के ठीक ज्ञान न होने से अनुवाद में अर्थ का अनर्थ हो जाता है ।

Q: अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

1. He has a daughter

a: उसके एक बेटी है ।

2. He has courage

a: उसमें साहस है ।

3. Mohan is stronger than Raju

a: मोहन राजु से मज़बूत है ।

4. The result of the exam will be declared soon

a: परीक्षा-परिणाम शीघ्र ही घोषित होगा ।

5. You did not write letters and words correctly.

a: तुम ने अक्षर और शब्द सही नहीं लिखे ।

6. You should be present at the time of election.

a: आपको चुनाव के समय उपस्थित रहना चाहिए ।

7. Please grant me one day's leave.

a: कृपया मुझे एक दिन की छुट्टी प्रदान करें ।

8. This copy of the document should be attested by a Gazetted Officer.

a: इस दस्तावेज की प्रतिलिपि किसी राजपत्रित अधिकारी के द्वारा सत्यापित होनी चाहिए।

9. **Crowd raised the slogan -- 'down, down, down'.**

a: भीड़ ने नारा लगाया - 'डाऊन, डाऊन, डाऊन' ।

10. **You are late by two hours.**

a: आपको दो घंटे की देरी हो गई है ।

Q: हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए ।

1. उसने अपने बेटे को उठाया ।

a: **She lifted her son.**

2. मैं आता तो सही पर रेलगाडी छूट गई ।

a: **Of course, I would have come, but I missed the train.**

3. नदियों में गंगा पवित्र मानी जाती है ।

a: **The Ganges is considered sacred among the rivers.**

4. बैंकों की व्याज दरें बहुत ज़्यादा है ।

a: **Interest rates of banks are very high.**

5. मद्रास मेल में मुझे एक शाँयिका मिल गई है ।

a: **I have got a berth in Madras Mail.**

6. अपेक्षित कागज़-पत्र नीचे रखे हैं ।

a: **The required papers are placed below.**

7. इस मामले में अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है ।

a: **No decision has so far been taken in the matter.**

8. आवेदन स्वीकार कर दिया जाए ।

a: **Application may be accepted.**

9. आप का यह माल आपके घर पहुँच जाएगा ।

a: **You will get the delivery of these goods at your home.**

10. उसकी क्रिकेट में रुचि नहीं है ।

a: **He has no interest in Cricket.**

Q: अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

1. **We talk about a socialist pattern of society, industrialisation, the removing of un-employment, and so on. What is really necessary is some how to activise and dynamise the base of the Indian social culture. We do not solve our problems unless we activise the base of Indian society, which means millions and millions of villagers, millions of workers and unemployed people.**

a. एक समाजवादी समाज, औद्योगीकरण, बेकारी का उन्मूलन आदि बहुत-सी चीज़ों के संबन्ध में हम बात करते हैं । लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि जैसे भी हो, भारतीय सामाजिक संस्कृति की बुनियाद को सक्रिय और गतिशील बनायें । भारतीय समाज याने करोडों ग्रामीण जनता, करोडों मज़दूर और बेकार लोगों को बिना सक्रिय बनाये हम अपनी समस्याओं को सुलझा नहीं सकते ।

2. **Efforts of speedy and effective implementation of official language policy of the Govt.continued to be made during this year. Official Language Implementation Committee of this department met at regular intervals to review the progress and recommend further steps in this regard. Similar Committees have been set up in other organisations also. Hindi Advisory Committee under the chairmanship of the Minister has been set up. Various steps have also been taken to popularise Hindi in daily official work.**

a. सरकार की राजभाषा नीति को शीघ्र और प्रभावशाली ढंग से कार्यान्वित करने के लिए इस साल प्रयत्न किया जाएगा । इसकी प्रगति के मूल्यांकन और सिफारिश के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक समय सयम पर होती है । अन्य संगठनों में भी इस प्रकार की समितियों का गठन किया है । मंत्री की अध्यक्षता में हिन्दी सलाहकार समिति का गठन भी हुआ है । दैनिक प्रशासनिक कामों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए और भी अनेक कदम उठाये गये हैं ।

3. **According to the Presidential Order, training in Hindi of all Central Government employees, except for those belonging to a new specified categories, has been made compulsory. It is for this purpose that the Department of Official Language set up the Hindi Teaching Scheme. Regular attendance in the Hindi Teaching Scheme classes and appearing in the prescribed examinaiton at the end of each term has been made obligatory for all employees nominated to attend the classes.**

a. राष्ट्रपति के आदेश के अनुसार कुछ श्रेणी के कर्मचारियों को छोड़कर, केन्द्रीय सरकार के सभी कर्मचारियों के लिए, हिन्दी सीखना अनिवार्य कर दिया गया था । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए राजभाषा विभाग हिंदी शिक्षण योजना चला रहा है । इसकी कक्षाओं में नामांकित कर्मचारियों के लिए कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित रहना और परीक्षा में बैठना अनिवार्य कर दिया गया है ।

4. **Pandit Jawaharlal Nehru became a historian by accident. His historical works belong to the genre known as prose literature. It was because he was put away in prisons by the British Govt. because he whipped up the national ferver of the people and this challenged the seat of power. In prison, he could take to his role as a historian. He had plenty of time on hand where others might have 'killed' time by indolence and passivity. Panditji turned to pen.**

a. पं. जवाहरलाल नेहरू संयोग से इतिहासकार बन गए । उनकी इतिहास संबन्धी रचनाएँ कारावास साहित्य की विधा के रूप में जानी जाने लगीं । उन्हें ब्रिटीश सरकार द्वारा कारावास में डाल दिया गया था क्योंकि उन्होंने जनता में राष्ट्रीय भावना को जगाया था और वह सत्ता के लिए चुनौती थी । कारावास में उन्होंने इतिहासकार की भूमिका को ग्रहण कर लिया । उनके पास काफी समय था, जबकि दूसरे लोग अकर्मण्यता और निष्क्रियता में ही अपना समय काट रहे थे । पंडित जी लेखन-कार्य में जुट गये ।

5. **Arabia is well-known for its camels and horses. The Arabs find the camel particularly useful. It can go without water for weeks and as you know, there are many deserts in Arabia,where it is difficult ot find water. So the Arabs use the camel for travelling and for carrying goods over the deserts. It has broad flat feet with which it can walk easily over the desert sands. Because it is useful for travelling in deserts, the camel is called 'the ship of the desert'.**

a. अरेबिया अपने ऊँटों और घोडों के लिए मशहूर है । अरब लोग, विशेष रूप से, ऊँट को उपयोगी समझते हैं । वह हफ्तों तक बिना पानी के चल सकता है । जैसा कि आप जानते हैं, अरेबिया में बहुत से रेंगिस्तान हैं जहाँ पानी मिलना बहुत ही कठिन है । अतः अरब लोग ऊँट का रेंगिस्तान में यात्रा करने और सामान ले जाने के लिए इस्तेमाल करते हैं । चौडे और पतले पैर होने के कारण वह रेंगिस्तान के बालू पर आसानी से चल सकता है । रेंगिस्तान में यात्रा के लिए उपयोगी होने के कारण ऊँट को 'रेंगिस्तान का जहाज़' कहलाता है ।

Q: हिंदी से अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए ।

1. दक्षिण भारत में हिन्दी की प्रगति देखकर मुझे असीम प्रसन्नता होती है । समूचे भारत के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता है । हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अनेक सुविधाएँ हैं । हिन्दी के द्वारा प्रादेशिक भाषाओं की हानि होने की कोई संभावना नहीं है । सारे भारत को एक डोरी में बाँधने के लिए हिन्दी एक सुन्दर सूत्र है । कुछ लोगों की शिकायत है कि दूसरी भाषाएँ सीखना मुश्किल है । वास्तव में इसमें कोई कठिनाई नहीं है । यूरोप में अपनी मातृभाषा के अलावा चार-पाँच भाषाएँ जाननेवाले लोगों को आप देख सकते हैं ।

a. **I am extremely glad to note the progress of Hindi in South India. A common language for all of India is a necessity. There are many advantages in making Hindi the national language. There is no possibility of Hindi endangering the provincial languages. Hindi is a fine rope with which to bind the whole of India together. Some complains that it is difficult to learn other languages. But there is really no difficulty in that. You can find many in Europe knowing four or five langauges, besides their mother tongue.**

2. विद्यासागर उदार और दानशील आदमी थे । वे अपनी क्षमता के अनुसार, अपने बचपन से लेकर गरीबों और ज़रूरतमन्द लोगों की सहायता करते थे । स्कूली छात्र होते वक्त वे बच्चों को सदा अपना रवाना दिया करते थे । यदि अपने सहपाठियों में कोई बीमार होता था तो वे उसके धर जाकर, पास बैठकर, उसकी परिचर्या करते थे । बंगाल का प्रत्येक घर उनके नाम से परिचित था ।

कोई भी भिखारी कभी भी वृथा उनसे सहायता नहीं माँगता था ।

a. **Vidyasagar was a very generous and charitable man. From his childhood he helped the poor and needy to the utmost of his power. As a boy at school, he often gave the food he had to eat to other boys. If one of his school-fellow fell ill, Vidyasagar would go to his house, sit by his bed and nurses him. His name became a household word in Bengal. No beggar ever asked him for relief in vain.**

3. भारत सरकार द्वारा संघ की राजभाषा संबन्धी आदेशें के कार्यान्वयन की प्रगति देखने के लिए सभी मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों से एक तिमाही प्रगति-रिपोर्ट मंगाई जाती रही है । इस रिपोर्ट की समीक्षा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भी की जाती है । प्रोफार्मा में जिस प्रकार की जानकारी मांगी जाती है उसे एकत्रित करने में समिति की व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं । राजभाषा सचिव की अध्यक्षता में हुई बैठक में रिपोर्ट के नये प्रोफार्मा पर विचार किया गया । समिति द्वारा अनुमोदित प्रोफार्मा की प्रति इसके साथ संलग्न है । रिपोर्ट एक महीने के अन्दर-अन्दर राजभाषा विभाग को भेज दी जानी चाहिए ।

a. **The Government of India has been getting from all Ministries, Departments and offices a quarterly progress report to watch the progress made in the implementation of orders issued in regard to the Union Government's official language. This report is also reviewed in the meetings of the Official Language Implementation Committee. There are political difficulties in collecting the type of information required in the existing performa. A new performa for the report was proposed and discussed at the meeting chaired by the Secretary of Official Language. A copy of the proforma as approved by the committee is appended herewith. This report should be sent to Department of Official Language within one month.**

4. अनुशासन जीवन की प्रत्येक स्थिति में आवश्यक है । अनुशासन सैनिक जीवन की आत्मा है । अनुशासन के बिना सेना भीड़ के समान है । परिवार में सद्भाव और मेल बनाये रखने के लिए इसकी आवश्यकता सबसे पहले पड़ती है । समाज और राष्ट्र में शांति, सद्भावपूर्ण संबन्ध बनाये रखने के लिए इसकी बडी आवश्यकता है । अनुशासन के बिना हम पशु से कम नहीं है । ईश्वर की सृष्टि में यदि अनुशसन नहीं है तो अराजकता फैल जाएगी और इस विश्व का तुरंत ही अंत हो जाएगा । यदि किसी छात्र में अनुशासन की आदतें स्कूली जीवन में बन जाती हैं तो इससे उसके भावी जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है ।

a. **Discipline is very essential in every walk of life. Discipline is the soul of military life. Without discipline an army is no better than a crowd. It is the first thing needed for maintaining the harmony and concord in a family. It is equally necessary in maintaining peace and harmonious relation in society or in a nation. Without discipline we are no better the brutes. If there is no discipline in god's creation, chaotic ocndition will prevail and this universe would come to an end in**

no times. If a student forms disciplined habits in his school career, it will have a good effect upon his future life.

5. हम जिस देश में रहते हैं, उसका नाम भारतवर्ष, हिन्दुस्तान या हिन्द है । हमारे देश का सबसे पुराना नाम भारतवर्ष है । प्राचीन राजा भरत, जिन्होंने इस देश पर शासन किया था, के कारण ही हमें यह नाम मिला है । कहा जाता है कि उन्होंने ही पहले पहल यहाँ राज किया था। हिन्दुस्तानी और हिन्द नाम विदेशियों ने दिये हैं । बहुत से लोग हमारे देश में आये । लेकिन उनके यहाँ रहने के बाद वे इस देश के नागरकि बन गये । इनमें से कई लोग उत्तर-दक्षिण दिशओं से सिन्धु नदी को पारकर आये ।

a. The country we live in is known as Bharatvarsh, Hindustan or Hind. The most ancient name of our land is Bharatvarsh. Our country gets this name because of its ancient ruler named Bharat. It is said that he was the first to rule over this land. The name Hindustan and Hind were given by foreigners. Many people came to our country. But after they settled here, they became its citizens. Many of these came to India from North-West after crossing the river Sindhu.

Unit 19 - पारिभाषिक शब्दावली

Q: 'पारिभाषिक शब्दावली' से क्या तात्पर्य है ?

a: जिस विषय या कार्यक्षेत्र के शब्दों में उसकी विशिष्ट संकल्पना अथवा अवधारणा को पारिभाषित किया जाता है उसे पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं ।

Q: सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द में क्या अंतर है ?

a: सामान्य शब्द में यथार्थ वस्तु और उसकी संकल्पना अनिश्चित रहती है । उसमें लचीलापन होता है और संदिग्धता बनी रहती है । किन्तु पारिभाषिक शब्द में संकल्पना और यथार्थ वस्तु निश्चित होती है । उनमें स्पष्टता होती है और स्वयंसिद्ध होती है । उनके प्रयोग में सैद्धान्तिक परिवेश का बोध होता है ।

Q: पारिभाषिक शब्दावली की ज़रूरत क्या है ?

a: विज्ञान की तथा अन्य क्षेत्रों की भी उपलब्धियों से लाभान्वित होने के लिए पारिभाषिक शब्दावली की ज़रूरत है । सूक्ष्म बौद्धिक चिंतन और तकनीकी ज्ञान के विकास के साथ तकनीकी भाषा का विकास होता है । जिस भाषा में सबसे अधिक पारिभाषिक शब्द है, वह भाषा बडी समृद्ध कहलायेगी। संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को स्थान मिलने पर पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता और भी बढ़ गयी है । राजभाषा के कार्यों को निस्पादित करने तथा ज्ञान, विज्ञान और विधि संबन्धी विशेष और स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए पारिभाषिक शब्दावली की बडी आवश्यकता है ।

Q: पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के क्या-क्या सिद्धान्त हैं ?

a: अखिल भारतीय स्तर पर पारिभाषिक शब्दावली-निर्माण के लिए 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना हुई । सारे देश के विज्ञानों, वैज्ञानिकों, विषय-विशेषज्ञों और भाषाशास्त्रियों से विचार-विमर्श करके आयोग ने शब्दावली-निर्माण के सिद्धान्त निर्धारित किये जो इस प्रकार हैं -

1) उन अंग्रेज़ी शब्दों को अपनाया गया है जो अंतर्राष्ट्रीय हैं और जिनका प्रचार कम से कम तीन राष्ट्रों में है ।

2) बहुप्रचलित शब्दों को ग्रहण किया जाए जैसे मशीन,मोटर, इंजन,फाइल,अपील आदि ।

3) संस्कृत शब्दावली को आधार मानकर उसमें उपसर्ग, प्रत्यय आदि जोड़कर अन्य शब्द बनाये जाये।

4) हिन्दी में प्रचलित अरबी, फारसी शब्दों को ग्रहण किया जाये । जैसे दस्तावेज, जिला,ज़मानत, हलफ़नामा आदि ।

5) भारतीय भाषाओं में प्रचलित सामान्य शब्दावलियों को ग्रहण किया जाये । जैसे पावती (मराठी), सौंध (कन्नड़), वाहिनी (बंगला) आदि ।

6) उच्चारण की दृष्टि से और हिन्दी की प्रकृति के अनुसार शब्दों का सरलीकरण किया जाये । जैसे - सचिव + आलय के 'सचिवालय' के अधार पर मंत्री + आलय से 'मंत्र्यालय' न बनाकर मंत्रालय' बनाये ।

7) रूपिम और शब्द के धरातल पर संकर या सम्मिश्रित शब्द बना सकते हैं । जैसे - बेबाकीपत्र (उर्दू + संस्कृत),

डारयीकार (अंग्रेज़ी + हिन्दी) आदि ।

8) हिन्दी पर्यायों का चयन करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और बोधगम्यता का ध्यान होना चासहिए । जैसे **Managing Director** -प्रबन्ध निदेशक, **Redtapism** - लालफीताशाही, **retirement** - सेवानिवृत्ति आदि ।

पारिभाषिक शब्दावलियों के कुछ नमूने :-

प्रशासन संबन्धी

Ability	--	योग्यता
Absence	--	अनुपस्थिति
Academic	--	अकादमीय
Accordingly	--	तदनुसार
Account Book	--	लेखा बही / बही खाता
Account joint	--	संयुक्त खाता
Accountant	--	लेखाकार
Accountant General	--	महालेखाकार
Accounts Officer	--	लेखा अधिकारी
Acknowledgement	--	पावती
Act	--	अधिनियम
Adhoc	--	तदर्थ
Adjournment	--	स्थगन
Administration	--	प्रशासन
Administrator	--	प्रशासक
Advance	--	अग्रिम/पेशगी
Affidavit	--	शपथ पत्र / हलफ़नामा
Agenda	--	कार्य सूची
Advisor	--	सलाहकार
Agreement	--	करार
Allegation	--	आरोप / मिथ्यारोपण
Allocation	--	विनिधान
Allowance	--	भत्ता

Allowance, Conveyance	--	**सवारी भत्ता**
Allowance, Dearness	--	**महंगाई भत्ता**
Allotment	--	**आबंटन**
Amendment	--	**संशोधन**
Annexure	--	**संलग्नक**
Anomally	--	**असंगति**
Appendix	--	**परिशिष्ट**
Appointment	–	नियुक्ति
Approval	–	अनुमोदन
Article	–	अनुच्छेद/नियम/वस्तु
Assistant	–	सहायक
Attached	–	संलग्न
Attestation	–	साक्षांकन
Audit	–	लेखा-परीक्षा
Auditor	–	लेखा-परीक्षक
Autonomous	–	स्वायत्त
Bill	–	विधेयक / हुंडी
Cabinet	–	मंत्रिमंडल
Candidate	–	प्रत्याशी / उम्मीदवार
Cashier	–	रोकडिया
Chancellor	–	कुलाधिपति
Circular	–	परिपत्र
Clerk	–	लिपिक
" Lower Division	–	अवर श्रेणी लिपिक
" Upper Division	–	प्रवर श्रेणी लिपिक
Commission	–	आयोग
Commissioner	–	आयुक्त
Consultant	–	परामर्शदाता
Demotion	–	पदावनति
Deputation	–	प्रतिनियुक्ति

Designation	–	पदनाम
Despatch	–	प्रेषण
Directive	–	निदेश
Director	–	निदेशक
Director General	–	महानिदेशक
Directorate	–	निदेशालय
Directory	–	निर्देशिका
Division	–	प्रभाग / मंडल
Document	–	प्रलेख / दस्तावेज
Draft	–	प्रारूप / मसौदा
Drafting	–	प्रारूपण / मसौदा लेखन
Enclosure	–	संलग्नक
Endorsement	–	पृष्ठांकन
Enquiry	–	जाँच, पूछताछ
Executive	–	कार्यपालिका / कार्यपालक
Executive Director	–	कार्यपालक निदेशक
Fund	–	निधि
File	–	मिसिल
Fund-Provident	–	भविष्य निधि
Gazette	–	राजपत्र
Gazetted Officer	–	राजपत्रित अधिकारी
General Manager	–	महाप्रबंधक
Grant	–	अनुदान
Head Quarters	–	मुख्यालय
Honorarium	–	मानदेय
Honorary	–	अवैतनिक
Identity Card	–	पहचान-पत्र
Invoice	–	बीजक
Director	–	निदेशक
Director General	–	महानिदेशक

Directorate	–	निदेशालय
Directory	–	निर्देशिका
Division	–	प्रभाग / मंडल
Document	–	प्रलेख / दस्तावेज
Draft	–	प्रारूप / मसौदा
Drafting	–	प्रारूपण / मसौदा लेखन
Enclosure	–	संलग्नक
Endorsement	–	पृष्ठांकन
Enquiry	–	जाँच, पूछताछ
Executive	–	कार्यपालिका / कार्यपालक
Executive Director	–	कार्यपालक निदेशक
Fund	–	निधि
File	–	मिसिल
Fund-Provident	–	भविष्य निधि
Gazette	–	राजपत्र
Gazetted Officer	–	राजपत्रित अधिकारी
General Manager	–	महाप्रबंधक
Grant	–	अनुदान
Head Quarters	–	मुख्यालय
Honorarium	–	मानदेय
Honorary	–	अवैतनिक
Identity Card	–	पहचान-पत्र
Invoice	–	बीजक
Issue	–	निर्गम / जारी करना
Judiciary	–	न्यायपालिका
Junior	–	कनिष्ठ / अवर
Leave	–	अवकाश / छुट्टी
Leave Maternity	–	प्रसूति छुट्टी
Legislative	–	विधायिका / विधान मंडल
Laison Officer	–	संपर्क अधिकारी

Management	–	प्रबंधन / व्यवस्था
Manager	–	प्रबंधक
Managing Director	–	प्रबंधकनिदेशक
Mayor	–	महापौर
Minister	–	मंत्री
Ministry	–	मंत्रालय
Minutes	–	कार्यवृत्त
Non-gazetted	–	अराजपत्रित
Notification	–	अधिसूचना
Office-Memorandum	–	कार्यालय ज्ञापन
Parliament	–	संसद
Parliament member	–	संसद-सदस्य
Passport	–	पारपत्र / पासपोर्ट
Postpone	–	स्थगित करना
Procedure	–	कार्यविधि
Proceeding	–	कार्यवाही
Project	–	परियोजना
Qualification	–	योग्यता
Recommendation	–	संस्तुति / सिफारिश
Recruitment	–	भर्ती
Registrar	–	कुल सचिव / पंजीचक
Registration	–	पंजीकरण
Reminder	–	अनुस्मारक
Reservation	–	आरक्षण
Resolution	–	संकल्प
Retirement	–	सेवानिवृत्ति
Routine	–	नेमी
Scheme	–	योजना
Secretary	–	सचिव

Secretary-Joint	–	संयुक्त सचिव
Secretary-Deputy	–	उपसचिव
Secretary-Under	–	अवर सचिव
Secretary-Additional	–	अपर सचिव
Secretariat	–	सचिवालय
Section	–	अनुभाग
Seniority	–	वरिष्ठता
superintendent	–	अधीक्षक
Supervisor	–	पर्यवेक्षक
Treasury	–	कोष / खजाना
Verification	–	सत्यापन
Vice Chancellor	–	उपकुलपति

वाणिज्य से संबन्धित

Account	–	खाता
" Current	–	चालू खाता
" Savings Bank	–	बचत खाता
Advertisement	–	विज्ञापन
Balance Sheet	–	तुलन पत्र
Bonus	–	लाभांश
Broker	–	दलाल
Clearance	–	निकासी
Collection	–	वसूली
Client	–	ग्राहक
Commercial Bank	–	वाणिज्य बैंक
Comptroller and Auditor General	–	नियंत्रतक और महालेखा परीक्षक
Consumption	–	उपभोग
Contract	–	संविदा / ठेका
Credit	–	उधार
Creditor	–	लेनदार

Crossed Cheque	–	रेखित चैक
Currency	–	मुद्रा
Custodian	–	अभिरक्षक
Custom duty	–	सीमा शुल्क
Despatcher	–	प्रेषक
Deposit	–	जमा
Depositor	–	जमा कर्ता
Discount	–	बट्टा / छूट
Dividend	–	लाभांश
Drawee	–	अदाकर्ता
Insurance	–	बीमा
Investment	–	निवेश
Liability	–	दायित्व / देयता
Nomination	–	नामांकन
Quotation	–	निर्ख
Surcharge	–	अधिभार

MODEL QUESTION PAPER
(CCSS)
Common Course in Hindi
Translation and Communication

Time : 3 hrs **Maximum : 30 weightage**

I. वस्तुनिष्ठ उत्तर लिखिए : (प्रश्न संख्या **1** से **12** तक के सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं ।)

(क) कोष्ठक से सही उत्तर चुनकर लिखिए :

1. संविधान के किस अनुच्छेद केअंतर्गत हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिया है ?

a) 343 **b)** 344 **c)** 351 **d)** 342

2. भारत में हिंदी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया ?

a) भोलानाथ तिवारी **b)** अमीर खुसरो **c)** भारतेन्दु **d)** महावीर प्रसाद

3. हम बस से आ रहे हैं । इसमें 'बस से' कौन-सा कारक है ?

a) कर्म कारक **b)** करण कारक **c)** संप्रदान कारक **d)** संबन्ध कारक

4. जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे क्या कहते हैं ?

a) लक्ष्य भाषा **b)** राजभाषा **c)** संपर्क भाषा **d)** स्रोत भाषा

(ख) खाली जगहों को भरिए :

5. **Administration** का हिन्दी समानार्थी शब्द ..... है ।

6. उर्दू शब्द ..... भाषा का है ।

7. ..... के अनुसार 'मूल के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदलना अनुवाद है' ।

8. जिस संज्ञा या सर्वनाम का विशेषण किया जाता है उसे ..... कहते हैं ।

(ग) एक-एक शब्द में उत्तर लिखिए :

9. 'तत्सम' शब्द से क्या तात्पर्य है ?

10. राम ने रोटी खायी होगी - यह वाक्य भूतकाल के किस प्रकार का है ?

11. संज्ञा के जिस रूप से अलग होने का भाव सूचित हो उसे क्या कहते हैं ?

12. 'हिन्दी' शब्द किस संस्कृत शब्द से उद्‌भूत माना जाता है ? **(12 x ¼ = 3)**

II. संक्षिप्त उत्तर लिखिए : (प्रश्न संख्या 13 से 21 तक के सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं ।)

13. कर्म कारक को सोदाहरण समझाइए ।

14. संज्ञा के कितने भेद हैं ? वे क्या-क्या हैं ?

15. राजभाषा से क्या तात्पर्य है ?

16. भावानुवाद से क्या तात्पर्य है ?

17. निजवाचक सर्वनाम को सोदाहरण समझाइए ।

18. नामधातु क्रिया से क्या तात्पर्य है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

19. हमने चावल खाया – इसको पूर्ण भूतकाल में बदलकर लिखिए ।

20. निम्नलिखित मुहावरों के समानार्थी हिन्दी रूप लिखिए ।

a) going to dogs

b) To add fuel to flame

c) To throw mud

d) Crocodiles tears

21. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी हिन्दी शब्द लिखिए ।

a) Current Account

b) Insurance

c) Psychology

d) Journalism (9 x 1 = 9)

III. किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

22. सर्वनाम की परिभाषा देकर उसके भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए ।

23. हिंदी भाषा के विकास पर प्रकाश डालिए ।

24. अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों की चर्चा कीजिए ।

25. मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की क्या-क्या समस्याएँ हैं ?

26. 'ने' प्रत्यय के प्रयोग की विवेचना कीजिए ।

27. हिंदी में कितने कारक हैं ? विवेचना कीजिए ।

28. हिंदी की विभिन्न शैलियों पर प्रकाश डालिए । (5 x 2 = 10)

IV. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

29. हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

Arabia is well-known for its camels and horses. The Arab finds the camel particularly useful. It can go without water for weeks and as you know, there are many deserts in Arabia, where it is difficult to find water. So the Arabs use the camel for travelling and for carrying goods over the deserts. It has broad flat feet with which it can walk easily over the desert sands. Because it is so useful for travelling in deserts, the camel is called ' the ship of the desert'.

(Arabia - अरब, well-known - सुप्रसिद्ध, camel - ऊँट, particularly - विशेषकर, desert - रेंगिस्तान, sand - रेत)

30. अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए ।

दक्षिण भारत में हिन्दी की प्रगति को देखकर मुझे असीम प्रसन्नता होती है। समूचे भारत के लिए एक सामान्य भाषा की ज़रूरत है । हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अनेक सुविधायें हैं । हिन्दी के द्वारा प्रादेशिक भाषाओं की हानि होने की कोई संभावना नहीं है । सारे भारत को एक डोरी में बांधने के लिए हिन्दी एक सुन्दर पुल है । कुछ लोगों की शिकायत है कि दूसरी भाषाएँ सीखना मुश्किल है। वास्तव में इसमें कोई कठिनाई नहीं है । यूरोप में अपनी मातृभाषा के अलावा चार-पाँच भाषाएँ जाननेवाले लोगों को अप देख सकते हैं ।

(सुविधायें - Conveniences, Advantages, पुल - Bridge, शिकायत - complaint)

31. वाक्य की परिभाषा देकर उसके भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए ।

(2 x 4 = 8)